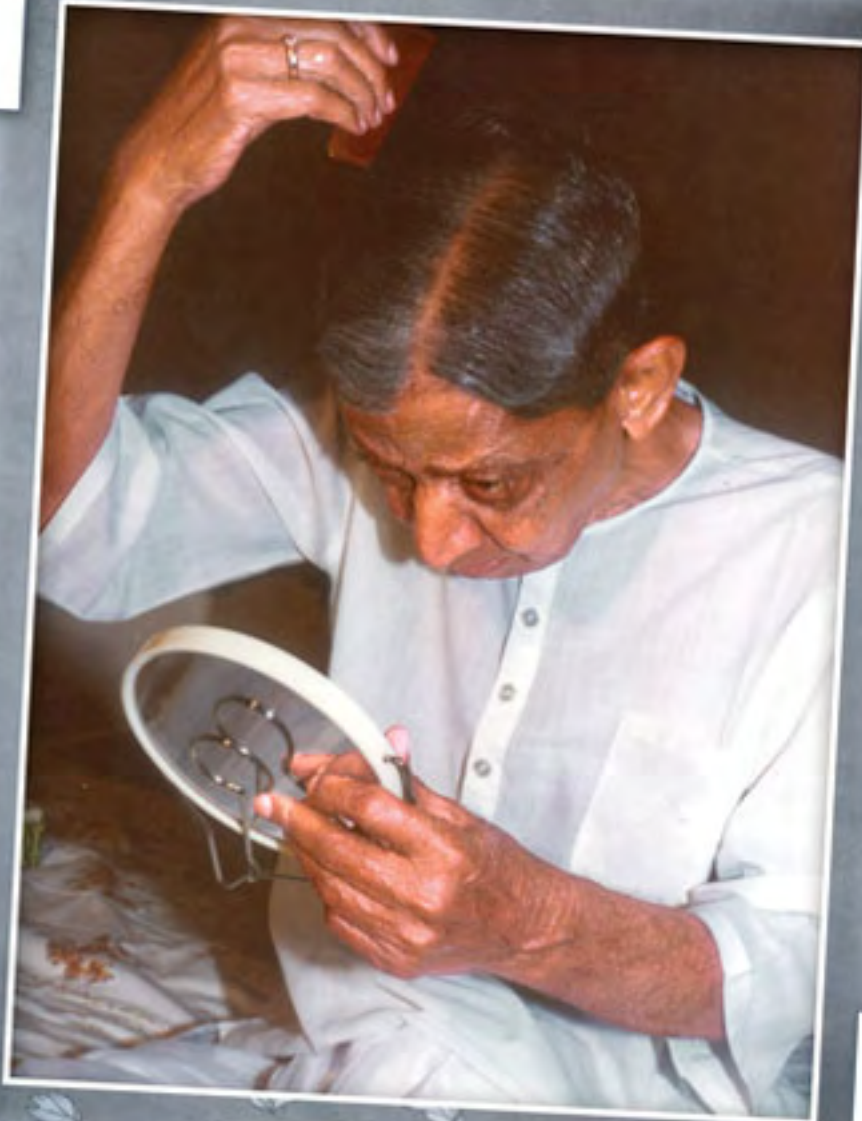


अक्टूबर २०१३

मूल्य: ₹ १०

# दादावाणी



•में• पटेल के साथ बहुत बातें करता था। मुझे ऐसी बातें करने में मज़ा आता है। हम भी इतने बड़े अंबालाल भाई से ऐसा कहते हैं न, 'छिहत्तर सालों से कुछ सुधरे हो क्या? यह तो गड़ने से समझदार हुए हों!' हम दर्पण में देखकर उन्हें थपथपाते, तब वे समझदार हो गए।

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : ८, अंक : १२

अखंड क्रमांक : ९६

अक्तूबर २०१३

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,  
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ. : अडालज,

जि. : गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

e-mail :

[dadavani@dadabhagwan.org](mailto:dadavani@dadabhagwan.org)

[www.dadabhagwan.org](http://www.dadabhagwan.org)

Printed & Published by

**Dimple Mehta** on behalf of  
**Mahavideh Foundation**  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by

**Mahavideh Foundation**  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at

**Amba Offset**

Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

**Mahavideh Foundation**  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## फाइल नं. 1 के साथ बातचीत का प्रयोग

### संपादकीय

'ज्ञानीपुरुष' परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने सिर्फ दो ही घंटों में आत्मज्ञान के प्रयोग के द्वारा, 'खुद को' शुद्धात्मा पद में बिठा दिया। फाइल नं-१ यानी कि 'चंदूभाई' के साथ पहचान करवा दी कि यह आपकी सबसे नज़दीकी फाइल कि जिनके संबंध से आपका मोक्ष अटका है। अब आपको अगर एकावतारी पद प्राप्त करना हो, तो इन 'चंदूभाई' के साथ जुदापन का व्यवहार रखना और उसके लिए उन्होंने बातचीत का प्रयोग प्रबोधित किया।

चंदूभाई यानी कि फाइल नं-१ के साथ बातचीत का प्रयोग, वह तो दादाश्री ने दिखाया हुआ अनोखा, किसी शास्त्र में नहीं मिले ऐसा अद्भुत प्रयोग है। और यह प्रयोग कैसा है? वह जो प्रयोगशाला में होता है वैसा नहीं है। और किसी साधन-सामग्री की ज़रूरत नहीं है। ज़रूरत सिर्फ 'ज्ञानकला' और 'बोधकला' की है। हम में भले ही दादा भगवान जितनी वे कलाएँ न हों लेकिन थोड़ी बहुत कम होती तो है न! यह ज्ञान देकर दादा ने हमें तीन सौ डिग्री पर बिठाया है इसलिए उतनी ज्ञानकला, बोधकला तो हमारे में आती है! अतः उतनी पूँजी तो खर्च कर सकते हैं न हम?

दादाश्री ने १९५८ में आत्मज्ञान प्राप्ति के पश्चात् 'खुद' अंबालाल यानी कि फाइल नं-१ से जुदा होकर और फिर अपने स्वपुरुषार्थ से खोज निकाला कि फाइल नं-१ के साथ बातचीत करने से खुद की सीट पर बैठकर स्व का आनंद ले सकते हैं। फिर तो वे यह प्रयोग रोजमर्रा के जीवन में खुद के साथ, व्यवसाय में या फिर अन्य किसी भी चीज़ के साथ करने लगे! दादाश्री ने इन अनुभव की बातों को खुद तक सीमित नहीं रखा बल्कि महात्माओं की ज्ञान-जागृति बढ़े, इस हेतु प्रयोगरूप से वे बातें खुली कीं। अब ज़रूरत इतनी ही है कि हम उस तरह करें। वह प्रयोग जैसे-जैसे करते जाओगे, जैसे-जैसे ताले खुलते जाएँगे। और यह तो मास्टर की (गुरुकिल्ली) है। चंदूभाई के साथ तन्मयाकार हो जाने से बंद हो जानेवाले जागृति के सभी ताले, इस चाबी से खोलकर आत्म जागृति रूपी ज्ञान प्रकाश का खज़ाना प्राप्त कर सकें ऐसा है।

दादाश्री ने कहा कि 'मैं जो कहता हूँ उसका आप सेवन करोगे तो मुझ जैसे बन जाओगे!' बातचीत के प्रयोग का हेतु भी यही है कि वह 'एक्ज़ेक्ट' फल देता है। अर्थात् खुद पुद्गल परिणाम से अलग रहकर, स्वपरिणति में संपूर्णरूप से बरत सकता है। जुदापन की जागृति में रहने से निश्चय और व्यवहार, दोनों सुधर जाते हैं। फाइल नं-१ के साथ बातचीत करके अलग रहने से डिस्चार्ज परमाणु शुद्ध होकर उसका निकाल हो जाता है। यानी उतना कर्ज तो अपना कम हुआ! 'फाइल नं-१ के साथ बातचीत करना, वही सत्संग कहलाता है'। अतः निरंतर सत्संग में ही रहकर मोक्ष मार्ग पर प्रगति करने का यह कितना अच्छा उपाय है? इसलिए चलिए हम सभी महात्माओं, दादा भगवान उद्बोधित फाइल नं-१ के साथ बातचीत के प्रयोग को अपनाकर अपना मोक्षमार्ग का काम निकाल लें।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

फाइल नं. 1 के साथ बातचीत का प्रयोग

जीव-शिव का भेद आत्मज्ञान द्वारा

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा है कि ‘मैं जीव नहीं हूँ, लेकिन शिव हूँ’ लेकिन वह अलग नहीं रह पाता।

**दादाश्री :** पहले तो आप, ‘मैं जीव हूँ’ ऐसा मानते थे। अब वह मान्यता टूट गई है और ‘मैं शिव हूँ’ ऐसा पता चल गया, लेकिन जीव कभी उसका भाव नहीं छोड़ता, उसका हक-वक कुछ भी नहीं छोड़ता। लेकिन यदि उसे पटाएँ तो वह सबकुछ छोड़ दे ऐसा है। जिस प्रकार कुसंग के स्पर्श से कुसंगी हो जाता है और सत्संग के स्पर्श से सत्संगी हो जाता है, उसी प्रकार उसे समझाएँगे तो वह सबकुछ छोड़ दे ऐसा समझदार है।

यह पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) क्या कहता है कि “आप तो ‘शुद्धात्मा’ बन गए, लेकिन हमारा क्या?” वह दावा करता है कि वह भी हकदार है। वह भी इच्छा रखता है कि ‘हमें भी कुछ चाहिए।’ अतः आपको उसे समझा-पटाकर काम लेना पड़ेगा। क्योंकि वह तो भोला है। पुद्गल का स्वभाव कैसा है? भोला है।

भोला इसलिए कि मूर्ख की संगत मिले तो मूर्ख बन जाए और समझदार की संगत मिले तो समझदार बन जाए। चोर की संगत मिले तो चोर बन जाए! जैसा संग वैसा रंग! लेकिन वह खुद का हक छोड़ दे, वैसा नहीं है। इसलिए उससे यों कलापूर्वक काम लेंगे तो वह पकड़ में आ जाएगा।

‘चंदूभाई,’ एक नंबर के पड़ोसी

अब आपको क्या करना होगा कि आपको चंदूभाई के साथ, चंदूभाई को दर्पण के सामने बिठाकर बातचीत करनी होगी कि ‘आप सड़सठ साल की उम्र में रोज सत्संग में आते हो, उसका बहुत ध्यान रखते हो, बहुत अच्छा काम करते हो’! लेकिन साथ ही साथ यह भी समझाना और सलाह देना कि ‘देह का इतना ध्यान क्यों रखते हो कि देह में ये ऐसा हो रहा है? वह होने दो न। आप हमारे साथ यों टेबल पर आ जाओ न! हमारे पास अपार सुख है!’ ऐसा आपको चंदूभाई से कहना है। चंदूभाई को यों दर्पण के सामने बिठाया हो तो वह आपको एक्जेक्ट दिखेंगे या नहीं दिखेंगे?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दिखेंगे।

हमारी संगत में अंबालाल भाई खुश

मैं तो यों पटेल के साथ (खुद के साथ) बहुत बातें करता था। मुझे मज़ा आता है ऐसी बातें करने में। हम भी इतने बड़े छिहत्तर साल के अंबालाल भाई से ऐसा कहते हैं न, ‘छिहत्तर सालों में कुछ सुधरे हो क्या? यह तो गढ़ने पर समझदार हुए हो।’

**प्रश्नकर्ता :** आप कब से बातें करते थे?

**दादाश्री :** ज्ञान होने के बाद। पहले तो किस तरह से बात करूँ मैं? ‘मैं जुदा हूँ’ ऐसा भान हुआ न! उसके बाद से।

शादी के जिस मंडप में बैठे थे, उसे भी याद करके अंबालाल भाई से कहता हूँ कि 'ओहोहो, आप तो कैसे शादी करने बैठे थे न! फिर सिर पर से पगड़ी (साफा) खिसक गई, तब फिर विधुर होने का विचार आया था आपको' ऐसा भी कहता हूँ। वह सब दिखता है। साफा कैसे खिसक गया था और शादी का मंडप वगैरह कैसा था, वह भी दिखता है। सोचते ही दिखता है। हम कहते हैं और हमें आनंद आता है। ऐसी बात करते हैं तो वे खुश हो जाते हैं।

### जुदा रखकर, कहे में रखो

अभी खंभात गए थे, तब एक भाई से कहा कि भाई, 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलो। वह बोलने लगा। बोल ज़रूर रहा था लेकिन उत्साह नहीं था, उत्साह दिखाई नहीं दे रहा था। तब मैंने कहा, 'तू ऐसा कर, क्या है तेरा नाम?' 'चंदू!' तो तू चंदू से कह कि 'ढंग से बोलो। ऐसा घोटालेवाला नहीं चलेगा।' ऐसा कहलवाकर बाद में बुलवाया। अच्छी तरह बोला। फिर तो इतनी अच्छी तरह बोला, ठेठ तक तो यही तरीका है और कुछ नहीं। आपको सिर्फ कहना है, 'ऐसा क्यों हो रहा है? नहीं होना चाहिए,' तो चली गाड़ी। यह तो कोई कहनेवाला ही नहीं है न! कोई नहीं हो तो हम तो हैं न, फिर कोई डोजिंग (घेन) रहेगा क्या? कोई दूसरा कहे तो हमें अच्छा नहीं लगेगा, इसके बजाय हम खुद ही कहे तो क्या बुरा है? अब ये बातें आपको कहनी है। आपको समझ में आ गया न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादाजी।

**दादाश्री :** यानी यदि सिर्फ एक ही बार कहे न, 'अरे चंदूभाई, आप इतने बड़े, पी.एच.डी. होकर, यह क्या बोल रहे हो?' इस प्रकार उनसे कहना। क्योंकि वे जानते हैं कि यह 'जुदा' है और आप भी जानते हो कि यह 'जुदा' है, लेकिन फिर जुदाई रखते नहीं हो। ऐसा रखो। जुदाई नहीं रखनी चाहिए? फिर आपके कहे अनुसार चलते हैं या नहीं, वह देखना।

आप कहकर तो देखना, ये जो मैंने उदाहरण दिया वैया।

### बातों से मोड़ो उसे, इस तरफ

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभी मुझे ऐसा होता है कि मुझे थोड़ा लिखना है, संस्था का थोड़ा काम करना है। फिर किताब लेकर बैठता हूँ, दूसरा कुछ हाथ में लेकर बैठता हूँ लेकिन फिर ऐसा होता है कि अब नहीं करना है, जाने दो। लेकिन मन, इतना उदास बन गया है कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन आप चंदूभाई से थोड़ा कुछ कहते रहो, थोड़ी बातचीत करो। भेद रखना चाहिए। अलग रहकर कहे न तो धीरे-धीरे सब राह पर आ जाएगा। अतः इतना थोड़ा सुधार लेना! आप चंदूभाई के साथ थोड़ी बातचीत करते रहो। वे (कार्य को) कल पर रख देते हों तो आपको चंदूभाई से कहना है कि 'भाई कल के बजाय इसे आज कर आओ न!' यानी इससे फिर क्या होगा? कि वह होता रहेगा, और ज़रूरत है इसकी। वस्तुस्थिति में तो यह जो अनिवार्य है, उसे किए बिना चारा ही नहीं है न!

वह तो भरा हुआ माल है। फिर निकलेगा तो सही न? अगर नहीं निकले तो अंदर दुर्गंध मारेगा कोठी में। फिर बुढ़ापे में निकलेगा उसके बजाय तो, अभी तक यह शरीर अच्छा है, अभी कुछ हर्ज नहीं है न! शरीर से कहना 'तुम घबराना नहीं, तुम्हारा दोष नहीं है। दोष किसका था वह मैं जानता हूँ' अहंकार का दोष था। अहंकार से भर लिया था यह सब।

### जुदा रखने के लिए, है बातचीत का प्रयोग अद्भुत

**प्रश्नकर्ता :** आप सत्संग में बार-बार जुदा रखने के प्रयोग के बारे में कहते ही हो।

**दादाश्री :** मुख्य चीज़ वही है न!

## दादावाणी

**प्रश्नकर्ता :** इस तरह बोलने से वास्तव में ये जुदापन का व्यवहार शुरू हो जाता है।

**दादाश्री :** यों हँसी मजाक करने से, मसखरी करने से, देखने से जुदापन रहता है। मैं तो ऐसा भी कहता हूँ न 'कैसे हो! मजे में हो न! अंबालाल भाई, ज़रा मौज में आ गए हो लगता है!' इससे हम फ़ेश रह सकते हैं न! इससे हम पूरे दिन फ़ेश रह सकते हैं, वह इतना काम करता है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने बहुत वर्षों पहले कहा था कि खुद के साथ बातचीत करना, बहुत शक्ति बढ़ जाएगी। अतः यह बातचीत का प्रयोग बहुत ही उच्चतम चीज़ है। इतना, अपने अक्रम विज्ञान के बारे में अगर कहें न, तो यह जुदा रखने की प्रक्रिया पूरे आधार जैसी चीज़ है।

**दादाश्री :** हम कहें कि 'तेरे लिए ज़्यादा चाय पीना अच्छा नहीं है।' तब कहे कि 'नहीं, पीनी है।' 'तो पीओ फिर।' बातचीत करके जुदापन का लाभ ले लेना है हमें।

बहुत मच्छर हो तब भी सारी रात सोने नहीं देते और दो हों तब भी सारी रात सोने नहीं देते। इसलिए हमें कहना है कि, 'हे मच्छरमय दुनिया! दो ही सोने नहीं देते तो सभी आओ न!' ये सभी नफा-नुकसान, ये मच्छर कहलाते हैं।

### व्यवसाय के साथ दादा करें बातें

हम हर एक चीज़ को जुदा रखते हैं। व्यापार में घाटा हो जाए तो कहते हैं कि व्यापार को नफा-नुकसान हुआ, क्योंकि हम नफा-नुकसान के मालिक नहीं हैं, तो फिर नुकसान हम किसलिए सिर पर लें? हमें नफा-नुकसान स्पर्श नहीं करता है। और यदि घाटा हुआ और इन्कमटैक्सवाला आया तो व्यापार से कहते हैं कि 'हे व्यापार, तुम्हारे पास चुकाया जा सके उतना हो तो इन्हें चुका दे, तुम्हें चुकाना है।'

हर एक व्यापार उदय-अस्तवाला होता है। हम व्यापार कैसे करते हैं, वह पता है? व्यापार के स्टीमर को समुद्र में तैरने के लिए छोड़ने से पहले पूजा-विधि करवाकर स्टीमर के कान में फूँक मारते हैं, 'तुझे जब डूबना हो, तब डूबना, हमारी इच्छा नहीं है। यदि हमारी इच्छा तुझे डुबाने की होती तो ये पूजा किसलिए करवाई?' पूजा-वूजा करवाकर फिर (तैरने के लिए) छोड़ते हैं।

फिर चाहे छः महीनों के बाद डूबे या दो साल के बाद डूबे, तब हम 'एडजस्टमेन्ट' ले लेते हैं कि छः महीनों तक तो चला न! व्यापार यानी इस पार या उस पार। आशा के महल निराशा लाए बिना नहीं रहते। संसार में वीतराग रहना बहुत मुश्किल है। यह तो हमारी ज्ञानकला और बुद्धिकला ज़बरदस्त है इसलिए रह पाते हैं।

### दादा करें बातें, हर एक चीज़ के साथ

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपकी वाणी में है न, कि टिन की पेटी रखते थे। उस पेटी से कह दिया था कि 'तुझे जब जाना हो तब चली जाना।' तो उसके साथ भी बातचीत होती थी!

**दादाश्री :** 'तुझे जब जाना हो तब चली जाना, हमारी इच्छा नहीं है। हम तो ये सो गए।'

**प्रश्नकर्ता :** 'लेकिन तू चली जाए तो मुझे हर्ज नहीं है।'

**दादाश्री :** नहीं। 'इसमें कोई हर्ज नहीं है' ऐसा नहीं बोलते हैं। 'तुझे जब जाना हो, तब चली जाना हमारी इच्छा नहीं है।' 'हर्ज नहीं है' ऐसा बोलेंगे, फिर तो चिढ़कर चली जाए। हमें तो 'हमारी इच्छा नहीं है' ऐसा कहना है, और फिर 'तुझे जाना हो तो चली जाना।'

यह कब से पूछ रहा है, पिस्ता लाऊँ? आम लाऊँ? अरे, पिस्ते बैठे हुए हैं उसे यह उठाएगा फिर!

वह भी ऐसा करता है, 'दादा, यह लाऊँ, आम लाऊँ?' अरे बैठे रहने दो न एक जगह पर, पिस्तों को!

ट्रेन में यों ऐसे बेग रखकर सो जाते हैं हम। तो लोग कहेंगे, 'यहाँ पर बेग उठा ले जाते हैं'। अरे वह बात जान ली। इस बात को जानकर क्या यह ऐसा हितकारी हो जाएगा? पूरी रात जगाएगा। और यदि तुम्हें झपकी आ गई, उस समय कोई ले जाएगा तो। अब छोड़ो न यह सब। उसके बजाय तो सो जा न चैन से। अगर होना होगा तो क्या ले जानेवाला इंतज़ार करेगा? इसके बजाय पूरी रात सो जाँ। 'तुझे जब जाना हो तब जाना, हमारी इच्छा नहीं है।' लेकिन वह सुबह फिर दिखती तो है।

**प्रश्नकर्ता :** इसलिए जूतों से भी कह दिया था।

**दादाश्री :** हाँ, जूतों से कहा था, 'तुम्हें जब जाना हो तब जाना' मैं कहाँ तुम्हारी चिंता करूँ पूरी रात! मुझे तो सो जाने दो न आराम से! किस तरह जाते हैं, आते हैं वह हम जानते हैं पहले से ही। इसलिए वह आपको बता देता हूँ।

**प्रश्नकर्ता :** यानी इसमें खूबी यह है कि हर एक के साथ, स्टीमर, बेग, चाय हो, पिस्ता हो उन सबके अस्तित्व के साथ बातचीत होती है।

**दादाश्री :** हाँ, ऐसे ही होता है न! ये सभी बुद्धि से कहते हैं 'कल दोपहर को भोजन के लिए आना' तो वह आज दखल नहीं करेगी। जब तक ये लोग कहते नहीं हैं, तब तक वह भीतर सिर उठाती रहती है। ऐसा है भीतर तो सबकुछ। यह चित्त भी चंचलतावाला है, मिश्रचेतनता है, पावरवाला है। मना करने पर तो आएगा फिर वापस, वह अपना काम किए बगैर नहीं रहता।

**बातचीत के प्रयोग का हेतु क्या है?**

**प्रश्नकर्ता :** इसमें बातें करने का जो है, इस प्रयोग का पूरा हेतु क्या है?

**दादाश्री :** वह एक्ज़ेक्ट फल देता है, इसलिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन ऐसा तो कोई सोच ही नहीं सकता कि इसके साथ बातें करें। आपने किस तरह यह प्रयोग ढूँढ निकाला?

**दादाश्री :** जब तक बुद्धिकला और ज्ञानकला नहीं फूटते, तब तक ऐसे विचार कैसे आएँगे? यह तो बुद्धिकला है। ऐसी कला कहाँ से होगी इन्सान में? उसके बस की बात नहीं न! एक बार यदि साथ में रहे तब जाकर थोड़ा बहुत सीख पाते हैं, तब फिर बुद्धिकला आती जाती है उसमें। फिर अपने आप ही फूटती है कुछ समय बाद, लेकिन बुद्धिकला जानता ही नहीं है न! बुद्धि नाम की कला, वह तो कहेगा भीतर, 'इनके ब्रेन टॉनिक सभी स्ट्रोंग है।' अरे! नहीं भाई, ब्रेन तो, मुझसे भी बड़े-बड़े बहुत हैं। बड़े-बड़े सोलीसिटर्स के! यह तो हमारी बुद्धिकला है।

**करो 'खुद' के साथ सत्संग**

**प्रश्नकर्ता :** दादा के मिलने के बाद मानो कि कभी ऐसा हो कि कोई सत्संगी न मिलें तो हम खुद चंदूभाई से कह सकते हैं न कि चलो चंदूभाई, हम सत्संग करें?

**दादाश्री :** सबकुछ कह सकते हो। चंदूभाई को पहचान ने लगे हो तो, उसे क्या नहीं कह सकते? चंदूभाई की पहचान हो गई कि अभी तक चंदूभाई है साथ में, फिर कुछ रहा ही नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** अब चंदूभाई अकेले सत्संग करें वह अच्छा या बहुत सारे लोग इकट्ठे होकर सत्संग करें, वह अच्छा!

**दादाश्री :** हमारे लिए तो अकेले करें या सब मिलकर करें, चंदूभाई के साथ बातें करे मतलब, सबकुछ हो गया। सत्संग शुरू हो गया। चंदूभाई के साथ बात करना, उसी को सत्संग कहते हैं।

हमारे सत्संग में बाकी लोग जो कुछ करें,

## दादावाणी

उसी अनुसार खुद अपने आपको उसमें जोइन्ट (जुड़ जाना) कर दे, तो सबसे उच्च है वह स्थान! सभी लोग जो कर रहे हैं उसमें खुद जोइन्ट हो जाओ। “चंदूभाई, आप ‘जोइन्ट’ हो जाओ उसमें” ऐसा कहते रहना चाहिए। सभी गा रहे हो तब कहना ‘गाओ’ सभी तालियाँ बजा रहे हों तो कहना ‘तालियाँ बजाओ।’ तो हो गया सबसे उत्तम। क्योंकि पुरुषार्थ सहित है न यह! और खुद अपने पुरुषार्थ में है, यानी अंदर शुक्लध्यान और बाहर धर्मध्यान।

### चंदूभाई को डाँटने से, हो आत्मा मज़बूत

**प्रश्नकर्ता :** मुझे सामनेवाले में, किसी में भी शुद्धात्मा नहीं दिखते हैं।

**दादाश्री :** शुद्धात्मा नहीं दिखें, उसमें हर्ज नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** अगर शुद्धात्मा दिखें तब तो दोष ही नहीं देखूँगा न? और यह तो मुझे सामनेवाले के ही दोष दिखते हैं।

**दादाश्री :** दोष तो चंदूभाई देखते हैं, भला आप कहाँ देखते हो? दोष देखते हैं, वे चंदूभाई देखते हैं, और इस पर आप डाँटते रहो तो जुदा हो गया, फिर हर्ज नहीं है। ज्यों-ज्यों आप डाँटोगे न त्यों-त्यों आत्मा मज़बूत होता जाएगा। और यदि ऐसा कहो कि देखो मुझे ऐसा हो रहा है, तो आत्मा मलिन हो जाता है।

### जाननेवाला और बोलनेवाला, दोनों अलग

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन मन में, विचारों से तो सामने दे ही दिया जाता है?

**दादाश्री :** कैसे विचार?

**प्रश्नकर्ता :** यों उल्टें विचार, अच्छे विचार, सभी विचार, मैं यों मन से दे देता हूँ।

**दादाश्री :** अरेरे! अभी भी ऐसा होता है! मेरे

साथ रहते हो, फिर भी! क्या दशा होगी? यों मन से दे दिया तब तो प्रतिक्रमण करते हैं लोग!

**प्रश्नकर्ता :** यह तो बता रहा हूँ कि ऐसा होता है। इसलिए आपको बता रहा हूँ।

**दादाश्री :** अगर ऐसा होता है, तो वह आपको कहाँ होता है? लेकिन आप सिर पर ले लेते हो, इसका गलत असर पड़ता है। चंदूभाई को ऐसा होता है। तो उसे आप डाँटो, फिर ठपका (उलाहना, झिड़कना, डपटना) दो। हर बार ऐसा करें कि तुरंत कह देना कि ‘अक्ल नहीं है क्या, शर्म नहीं आती?’

**प्रश्नकर्ता :** वह तो मैं (उसे) लड़ता हूँ लेकिन जुदा नहीं रहता है।

**दादाश्री :** लेकिन आप तो कहते हो न, कि ‘मुझे ऐसा होता है’ यानी आपने सिर पर ही ले लिया न! हस्ताक्षर करके! ‘चंदूभाई को ऐसा होता है’ ऐसा कहना पड़ता है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ऐसा कहूँगा।

**दादाश्री :** सिर पर ले लेते हो इसलिए पहुँच जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** मुझे ऐसे जुदा नहीं रहता, तो मैं क्या करूँ?

**दादाश्री :** वह अलग ही रहता है। आप जानते हो इसलिए अलग ही कहलाएगा न! जुदा हुए बगैर जानेगा कौन? जाननेवाला और बोलनेवाला दोनों जुदा ही होते हैं। इसलिए अलग ही रहता है। आपको आत्मा जुदा रहता है। आपको समझ में नहीं आया?

### सिर पर ले लेने से हो जाए अंधेरा

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यों सभी में शुद्धात्मा नहीं दिखते हो तो?

**दादाश्री :** दिखते ही हैं शुद्धात्मा। अगर नहीं दिखते तो वह तो ‘चंदूभाई’ को नहीं दिखते हैं।

## दादावाणी

आपको तो दिखेंगे ही शुद्धात्मा। डॉटो न, *ठपका* देते रहो पूरे दिन, एक-दो दिन करके देखना।

**प्रश्नकर्ता** : हाँ, करूँगा।

**दादाश्री** : 'आत्मा क्यों नहीं दिखता? सभी आत्मा ही हैं न,' ऐसा कहना।

**प्रश्नकर्ता** : आपने कहा न, इन सभी में शुद्धात्मा नहीं दिखते। वह तो 'चंदूभाई' को नहीं दिखते।

**दादाश्री** : हं, 'आपको' दिखते हैं न! 'दिखते हैं,' और उसे आप नहीं दिखते ऐसा कह रहे हो। ऐसा कहते हो न इसलिए अंधेरा हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता** : तो वहाँ पर कैसा रखना चाहिए?

**दादाश्री** : शुद्धात्मा दिखते हैं न फिर बाद में। निर्दोष दिखते हैं, वही से नहीं समझ जाना चाहिए कि कौन दिख रहा है?!

**प्रश्नकर्ता** : निर्दोष कहाँ दिखते हैं? दोष ही दिखते हैं।

**दादाश्री** : लेकिन, वह तो 'चंदूभाई' को दिखते हैं।

**प्रश्नकर्ता** : आपको सिर पर ले लेने की ज़रूरत नहीं है।

**दादाश्री** : आपके सिर पर है ही नहीं। यह तो सिर पर ले लेता है, उसका फल मिलता है उसे।

**प्रश्नकर्ता** : फल में क्या मिलता है?

**दादाश्री** : ये दुनिया की मार पड़ती है और मोह बढ़ता जाता है फिर।

**प्रश्नकर्ता** : इसमें मोह किस तरह से बढ़ जाता है?

**दादाश्री** : जिस मोह को हमने धकेल दिया

होता है, वह फिर से दिखने लगता है। जिस मोह को ज्ञानीपुरुष की आज्ञा से धक्का लगा है, वह फिर से दिखने लगता है। ऐसे जान-बूझकर कुएँ में गिरते हो।

**प्रश्नकर्ता** : यानी कुछ हो जाए तो, उसे सिर पर नहीं लेना चाहिए?

**दादाश्री** : हाँ, सिर पर नहीं लेना चाहिए। "आप" (चंदूभाई) जुदा और 'हम' भी जुदा। उतना कह दिया, तो बस हो गया! उतना कहना पड़ता है। 'हम' जुदा, उस घड़ी अपना ज्ञान पलट नहीं जाए इसलिए बोलना पड़ता है। शुद्धात्मा अलग है और 'यह' (चंदूभाई) भी अलग है, दोनों अलग ही चीज़ हैं न! इसलिए जैसा है वैसा बोलना है हमें। जितना जाना है उतना। फिर असर नहीं करेगा ज़रा भी। भीतर ज़रा कुछ बदलाव हुआ कि उसमें 'आप' (चंदूभाई) जुदा और 'मैं' जुदा, बस हो गया! 'हम हैं', ऐसा गप नहीं बोलना है। यह कल्पित चीज़ नहीं है!

## कह दिया यानी आप मुक्त

आप यदि रोज़ शेर-बाज़ार का काम करते हों, आपके मुनीम जी होशियार हो, उस मुनीम को यदि एक दिन आप कहो कि भाई 'आज दो दिन के लिए विवाह समारोह में जाना है, तो शेर-बाज़ार का कामकाज आप कर लेना।' अब वह कामकाज करता है, और नुकसान हो गया तो भी उसे मन में ऐसा नहीं रहेगा कि यह नुकसान मुझे हुआ। वह जानता है कि यह नहीं हुआ होता तो अच्छा था, इन सेठजी को नुकसान होगा। लेकिन 'मुझे हुआ' ऐसा तो उसे लगेगा ही नहीं न! क्या लगेगा उसे? और फायदा हुआ हो तो भी?

**प्रश्नकर्ता** : तो भी कुछ नहीं।

**दादाश्री** : हाँ... उसी तरह 'हम' ने इन चंदूभाई से कह दिया न, यानी फिर दादा का नाम लेकर कहना कि 'भाई, इस प्रकार से। तो फिर कुछ लेना-



देना नहीं।' हमारे कहे हुए शब्द का पालन करे तो मुश्किल है क्या कुछ भी? ये जो कहे उतने शब्दों पर आप तुरंत अमल कर दो, तो चल पड़ेगी गाड़ी। सेफसाइड दिखा देगी।

### मन के साथ करो बातचीत इस प्रकार

आप स्टीमर में बैठे हों और जोर से हवा चले और बहुत धमाल मच जाए, तो आपका मन क्या शोर मचाएगा? 'यह उलट जाएगा तो क्या करेंगे?' तब आपको मन से कहना है कि 'तूफान ज़्यादा है, इस समय तो शायद डूब भी सकता हूँ,' 'हमने भी नोट किया।' तू हमें चेतावनी दे रहा है, तो तेरा कहना ठीक है। हम सावधान रहेंगे। और जब हवा शांत हो जाए तब, 'अब कुछ नहीं होगा' ऐसा भी कहता है फिर। अतः मन भी वीतरागी है। जैसे-जैसे बाहर के पर्याय खड़े होते हैं न, वैसी हमें खबर दे देता है। ये सभी अपना-अपना काम करते हैं न, वे वीतरागी हैं बेचारे, हाँ, सिर्फ 'खुद' ही राग-द्वेषवाला।

अब राग-द्वेषवाले कौन थे? 'शुद्धात्मा' राग-द्वेषवाला नहीं है। यह आप जो मान बैठे हो देहधारी 'चंदूभाई' और मन-वचन-काया का योग, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नौकर्म, उनमें से सारे राग-द्वेष होते थे। अब, इन राग-द्वेष को एक ओर रख दिया आपने। हाँ, बोरे रख दो न, एक ओर, बिना बात के दुर्गंध मारते हैं। और आपने तो शुद्धात्मा पद प्राप्त किया है।

लोग तो मन में तन्मयाकार हो जाते हैं। मन खुद चंचल है, इसलिए फिर लोग चंचल हो जाते हैं। मन में तन्मयाकार होने जैसा नहीं है, मन वह तो संयोगों को दिखाता है। वे सूक्ष्म संयोग हैं। 'स्टीमर डूब जाएगा,' ऐसे विचार का आपको सूक्ष्म संयोग प्राप्त हुआ। अतः यह संयोग फिर वियोगी स्वभाव के हैं। अतः आप ना कहो तो भी पाव या आधे घंटे में उसका वियोग हो जाएगा और फिर दूसरा संयोग आएगा। ये जो इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं, वे स्थूल संयोग हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यदि मन कुछ बताए, तो मन से कह देना है कि तेरा नहीं चलेगा। यानी मन के साथ बात करते ही जुदा पड़ ही जाएगा।

**दादाश्री :** हाँ, जुदा पड़ ही जाता है और इस देह को 'फाइल नं १' कहा तो भी जुदा पड़ जाता है।

### बातचीत से फाइल वन अलग जानी जाती है

तू आत्मा है और यह पुद्गल है। तू डरा कि यह चढ़ बैठेगा। 'पूरी दुनिया इधर से उधर हो जाए, इस देह को बुखार आए या पक्षाघात हो जाए या जले, लेकिन डर जाए वह कोई और,' ऐसा कहना। यदि घाटा जाएगा तो पुद्गल के घर पर, अपने घर कभी भी घाटा होता ही नहीं। दोनों का व्यवहार अलग है, व्यापार अलग। सेठ और दुकान अलग होते हैं या एक ही होते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** अलग-अलग।

**दादाश्री :** जबकि, जब दुकान जलती है तो समझता है कि मैं जल गया। अरे, तू कहाँ जल रहा है? दुकान जल रही है। चल, हम चाय पीते हैं। तब मैं जल गया, मैं जल गया मानता है, पराई चीज़ को सिर पर लेकर घुमता है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसी कोई घटना जब घटती है, तब आर्तध्यान और रौद्रध्यान तो होते ही हैं, फिर प्रतिक्रमण भी करता हूँ।

**दादाश्री :** उसे आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं कहते। वे आर्तध्यान-रौद्रध्यान आपको नहीं होते। आप तो आत्मा हो, वह तो चंदूभाई को होता है। उसमें भी यदि चंदूभाई को अधिक हो जाए, तब कहना, 'भाई ज़रा धीरज से काम लो।' और इस तरह जब बातें करता है तब तेरी यह फाइल नं १, वह सामनेवाले व्यक्ति के साथ बात करती है। उसे तू भी 'जानता' है और वह भी 'जानता' है, क्या बातचीत हुई, वह। आप तो ज्ञाता-दृष्टा परमानंदी, अपना स्वभाव अपने में।

**अलग देखना सीखो, 'चंदूभाई' को**

**प्रश्नकर्ता :** अब यह जो हुआ, उस समय देखना-जानना यानी क्या?

**दादाश्री :** राग-द्वेष नहीं करना अर्थात् देखना-जानना कहलाता है।

चंदूभाई में समझदारी आई हो तो समझदारी को 'देखो,' 'ओहोहो! बहुत समझदार हो।' पागलपन आए तो पागलपन को 'देखो'। चकराया हुआ हो तो चकराया हुआ 'देखो'। उसके अलावा और क्या होनेवाला है? आप बचपन में कभी इमोशनल (भावुक) हुए थे?

**प्रश्नकर्ता :** हुए थे। अभी भी हो जाते हैं। लेकिन ज्ञान लेने के बाद ये कम हो गया है।

**दादाश्री :** हाँ। लेकिन ज्ञान लेने के बाद आपके सिर पर ज़िम्मेदारी नहीं है न? वह तो फिर चंदूभाई की ज़िम्मेदारी हुई न? तो 'आप' जुदा, 'चंदूभाई' जुदा। चंदूभाई इमोशनल हो जाएँगे, लेकिन आप तो नहीं हो जाते हो न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, कभी-कभी वापस इकट्ठा हो जाता है और कभी-कभी जुदा रहता है।

**दादाश्री :** इकट्ठा हो जाता है, वह बात अलग है, लेकिन वह तो अलग हो गया है। एक दिन वास्तव में वह अलग रहेगा फिर। अभी बाकी के कमरे अच्छी तरह खाली नहीं हुए न! इसलिए अभी एक होना पड़े। दूसरे कमरे जैसे-जैसे खाली होते जाएँगे, वैसे-वैसे जुदा होता जाएगा, (आप) जुदा हो चुके हो इसलिए।

पुद्गल भय, वह पौद्गलिक भूत है। उससे हमें डरना नहीं है। 'हमें' 'चंदूभाई' से कहना चाहिए, 'ऐसे बनिए की तरह करते हो, वह नहीं चलेगा। क्षत्रिय बनो। और भी किसी दुःख को आना हो तो आओ। पैर दर्द करें, सिर दर्द करें।' वह पुद्गल है

और हम आत्मा, अलग! ऐसा देखना सीखें। तुम चंदूभाई को 'देखना' सीखो।

**बातचीत से स्पष्ट दिखें जुदापन**

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन ऐसे 'देखना' सिखना मतलब इस तरह से बात करनी चाहिए न अंदर ही अंदर?

**दादाश्री :** बात करने से 'देखने' का अधिक सीखा जा सकता है। इन्टरेस्ट आता जाए तो जुदा रहने का भाव होता जाता है और हैं ही इतना अधिक जुदा!

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है। बाहर बिमारी की असर हो, वीकनेस हो तो भी अंदर तो बातचीत चलती ही रहेगी।

**दादाश्री :** वह तो अलग-अलग ही रहेगी।

**प्रश्नकर्ता :** उस समय आप क्या बात करते हो?

**दादाश्री :** सभी, वह तो जैसा है वैसा ही।

**प्रश्नकर्ता :** यानी आप अंदर पूछते हैं? कैसी लग रही है तबियत, ऐसा सब पूछा करते हैं।

**दादाश्री :** ये भाई कहें कि दादा, अब रूम में अंदर थोड़ा चलें, घुमें। तो वे घुमते हैं, उस घड़ी मैं देखता रहता हूँ कि 'ओहोहो! कैसे दिख रहे हो! क्या हालत हुई है आपकी! यह आप चल रहे हो उस पर मुझे हँसी आ रही है कि आपकी यह हालत तो देखो! किसी को छूने नहीं दें ऐसे व्यक्ति, उसे आज हाथ पकड़कर चलाना पड़ रहा है!'

**प्रश्नकर्ता :** यानी इसमें वह जो किसी को छूने नहीं दें, वे भी आप ही। हाथ पकड़कर चलते हैं, वह भी आप! पूरा सब जुदा पड़ जाता है। इसमें अंहकार बिल्कुल भी नहीं रहता, मालिकी भाव नहीं रहता। सबकुछ खत्म हो जाता है पूरा!

**दादाश्री :** हम छूट देते हैं उसे कि जो करना हो, उसके साथ फिर हम ऐसी मज़ाक भी कर लेते हैं कि 'ओहोहो! आपको तो कुछ छूता ही नहीं है न! अब तो आप पूरे भगवान बन गए लगते हो न!' तब कहते हैं, "नहीं, 'आप' भगवान हो, 'मैं' नहीं हूँ भगवान।"

### बातचीत रखवाए वेदना में जुदापन

जिसे कुछ भी वेदना होती है वह 'हम' नहीं है और 'हम' जो हैं उसे वेदना नहीं हो सकती। जिसे किसी भी प्रकार की वेदना होती है, वह अपना भाग (हिस्सा) नहीं है और अपने भाग में वेदना नाम का गुण है ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** वह वेदना किसे होती है?

**दादाश्री :** चंदूभाई को, उस अहंकार को होती है। जो अहंकार था न, वह भुगत रहा है। ये अहंकार जिसने किया था न, वही अहंकार फिर इसे भुगतता है कि 'मुझे ऐसा हुआ, वैसा हुआ' और हमें इन सबको जानना है कि 'ओहोहो! चंदूभाई, आपको अड़चन तो हुई होगी? इसलिए हम आपको शांति दे रहे हैं।' हमें उनसे अलग रहना चाहिए। हमको कुछ होता ही नहीं है। हम तो बिल्कुल अलग ही हैं। यह तो जिसने किया था, अहंकार से किया था, वही अहंकार ही भुगत रहा है।

**प्रश्नकर्ता :** मेरे अंदर वेदना बहुत बढ़ गई है तो ज्ञान में किस तरह रहना चाहिए?

**दादाश्री :** वह तो भले ही बढ़े। तब अहंकारवाले को हमें कहना है कि 'चंदूभाई, उम्र हो गई है इसलिए वेदना बढ़ गई है, ज़रा शांति रखिए। फिर भी उम्र के हिसाब से तो आपका शरीर अच्छा है।'

### वीतरागों की कैसी दृष्टि?

वीतरागों का ज्ञान कैसा है? क्या रहा अब मेरे

पास? जब एक पैर कट जाए तब वे कहते हैं, 'नहीं, अभी दूसरा पाँव तो है न। भले ही दो हाथ नहीं हैं, एक पैर नहीं है, लेकिन दूसरा पैर तो है न। कोई सहारा देगा तो एक पैर से भी चल सकूँगा।' वे नुकसान को नहीं गिनते। 'मेरे पास मुनाफे में क्या रहा' उसे देखता है। इतने सालों बाद भी चंदूभाई के पास कितनी सारी मिल्कियत बची है! आँखें हैं, नाक है, कान हैं, हाथ-पैर अच्छे हैं, सब हैं। वीतराग हमेशा ऐसा देखते थे। वीतराग दृष्टि क्या देखती है? मेरे पास क्या है वह देखती है। आपकी उम्र के लोगों को लकवा मारते नहीं देखा है? तब हमें कहना है कि 'ओहोहो! चंदूभाई, आपको तो कुछ नहीं हुआ है, यों अकारण ही क्यों डर जाते हो?' ऐसे उदाहरण देना पड़े।

### कहना 'मुझे नहीं, चंदूभाई को हो रहा है'

मिश्रचेतन है न, इसलिए ऐसा सब होगा। यह मिश्रचेतन है, अहंकारी है, इसलिए हमें कहना है कि 'चंदूभाई, यह दूसरों सबका देखो तो सही। आपका तो बहुत अच्छा है, पुन्यशाली हो।' वर्ना भुगतने के सिवा और चारा है नहीं न, चिल्लाए तब बढ़ेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** आपसे तो कह सकते हैं न?

**दादाश्री :** हाँ, कहने में हर्ज नहीं है। लेकिन वह हमें चिपक जाता है। इसलिए हमें ही ऐसा कहना है कि 'चंदूभाई, आपको कुछ खास हुआ नहीं है।' और अगर आपको मुझ से कहना हो तो आप ऐसा कहना कि 'चंदूभाई को ऐसा हो रहा है।' इस तरह कहना चाहिए। 'मुझे हुआ है' इस तरह नहीं कहना चाहिए। वह अहंकार ने किया था इसलिए अहंकार ही भुगत रहा है, हम आत्मा के तौर पर अलग हो गए। जिसने किया वह भुगते, हमें क्या लेना-देना? आत्मा अलग कर दिया इसलिए व्यवहार अलग रखना पड़ता है। बात को समझना है। बात समझ में आ जाए तो अपने आप फिट हो जाती है। इस बात को आप समझ गए कि चंदूभाई आपके

पड़ोसी हैं और वे जो अहंकार है, वही चंदूभाई है। कौन भुगत रहा है? तो वह है अहंकार।

### अहंकार अलग और हम अलग

यदि कर्ता बनेगा तो भोक्ता बनना पड़ेगा। आयुष्य तो समाप्त हो जाएगा तब फिर और कोई चारा ही नहीं रहेगा न उसके पास। आयुष्य समाप्त हो गया मतलब सब खत्म हो गया। तब तक, एक कर्म बंद होता है और दूसरा उत्पन्न होता है, सुलगता ही रहेगा। यह धुआँ तो निकलता ही रहेगा। इसका अंत नहीं आएगा। देह का धुआँ यदि यहाँ से (हार्ट के रोग के रूप में) नहीं निकलेगा तो वहाँ से (पेट के दर्द के रूप में) निकलेगा। यहाँ से (जोड़ों के दर्द के रूप में) नहीं निकलेगा तो वहाँ से (दाँत के दर्द के रूप में) निकलेगा। नहीं तो कान में दर्द होगा, दूसरा होगा, तीसरा होगा लेकिन कहीं न कहीं से धुआँ निकलता ही रहेगा। उसके बजाय हम कहें कि, 'धुएँवाला ही है यह!' स्वभाव ही इसका ऐसा है। ज्यादा सहलाने-थपकाने से चढ़ बैठता है।

अहंकार जुदा है और हम जुदा। वह अहंकार भी मुर्दा हो चुका है। उसमें से जीव भाग खींच लिया है। जीव, आत्मा में चला गया है और अजीव (डिस्चार्ज) अहंकार बाकी रहा है। आप देह नहीं हो, मन नहीं हो, बुद्धि नहीं हो, चित्त नहीं हो। इन में का कुछ भी आप नहीं हो। आपको लेना-देना नहीं है। व्यर्थ ही किसी और की चिट्ठी आप ले लो, वह किस काम की? चिट्ठी चंदूभाई की है और उसे आप आगे होकर ले लेते हो कि 'लाओ, मेरी है।' आपकी चिट्ठी आए तो आपको लेनी है।

### मैं नहीं, चंदूभाई बोले

मैं ऐसा पूछूँ कि कौन बोला? तो वे कहती हैं कि, 'नीरू बोली।' इस पर से फिर जुदापन का ज्ञान हो गया उन्हें और उसके बाद नीरूबहन प्रतिक्रमण करती हैं।

इसी प्रकार फिर आपको मुझ से कहना है कि 'ये चंदूभाई बोले।' तब अपना ज्ञान हाज़िर रहा, ऐसा कहलाता है। यहाँ पर ऐसा ही बोलने का रिवाज है। उसे हम 'बावाजी' कहते हैं। मैं, बावो और मंगलदास! मंगलदास कुछ हद तक, फिर उससे आगे जो है, वह बावो है।

**प्रश्नकर्ता :** कुछ हद तक 'मैं?'

**दादाश्री :** नहीं, वह तीन सौ छप्पन पर यह बावो है, फिर सत्तावन, अट्ठावन, उनसठ, यानी उनसठ तक बावो माना जाता है। तीन सौ साठ हुआ अर्थात् 'मैं' हो गया। यानी 'मैं' तो 'शुद्धात्मा' ही हूँ, लेकिन यह भी 'मैं' हो गया, दोनों तीन सौ साठ हो गए लेकिन तब तक बावो।

### आत्मा, आत्मा में बर्ते इस तरह

**प्रश्नकर्ता :** अपने महात्मा जैसे-जैसे ज्ञान को उपयोग में लाते हैं, वैसे-वैसे उनकी ज्ञान की अवस्था बढ़ती जाती है या फिर ज्ञान प्राप्ति के बाद उपयोग नहीं रखने पर भी आपकी कृपा से ज्ञान में पूर्णता आती ही है?

**दादाश्री :** उपयोग में ही रहना चाहिए। उपयोग संसार में रहे, और अपना ज्ञान बढ़ता जाए ऐसा संभव नहीं है। संसार *निकाली* चीज़ है। *निकाली* चीज़ में उपयोग नहीं रहना चाहिए। जो हो रहा है उसे देखते रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, तो वास्तव में उपयोग कैसे रखना चाहिए, वह समझाइए?

**दादाश्री :** पाँच आज्ञा वही सही उपयोग है। आप सभी में शुद्धात्मा देखो, यह फाइल है ऐसा देखो, तो भी शुद्धात्मा देखा ऐसा कहलाए, या फिर शुद्धात्मा देखो तो भी फाइल हो गई। यानी कि ये पाँच आज्ञा, वही उपयोग है। इससे फिर अंदर ज्ञान का उपयोग और ज्यादा बढ़ता जाएगा। सही उपयोग

बढ़ता जाएगा, यह बाढ़ है उपयोग में रहने के लिए। उपयोग रखे बगैर ज्ञान कभी भी बढ़ ही नहीं सकता। उपयोग मतलब आज तक उपयोग संसार में था, जो आत्मा संसार में बर्तता था, वह आत्मा अब, आत्मा में बर्तता है, वही है उपयोग। आत्मा, आत्मा में कैसे बर्तता है? तब कहे, बच्चा दूध ढोल रहा हो, उसे देखता रहे। वहाँ जाकर बच्चे को रोकता जरूर है। हमें तब चंदूभाई से कहना है कि बेटे को रोकना, लेकिन कषाय मत करना। इमोशनल नहीं होना है।

### बावा को समझकर जीवन करो रोशन

अब जीवन इतनी अच्छी तरह से बिताना है, अब जो बावा अपने साथ है, उसे कह दें कि 'जीवन ऐसे जीओ जैसे अगरबत्ती।' अगरबत्ती भी जीवन बिताती है, उसका काम क्या है? खुद जलकर दूसरों को सुख देना। इसलिए उसकी जिंदगी व्यर्थ नहीं गई। अच्छी, साफ-सुथरी गई। अगरबत्ती की तरह, ऐसा समझना है। और, अगरबत्ती की तरह हो पाए, ऐसा है। माल ऐसा कि सुगंधीवाले लोग हो सकते हैं।

यह बावो कौन है? संसार में ऐसा करे, वैसा करे, बच्चों को मारे-पीटे, यह सबकुछ बावो, और मैं कौन? शुद्धात्मा। अर्थात् उस बावा में से निकलना है हमें। नाम भले ही रहे। यानी हमारा भी अंबालाल नाम रहा है, हम बावा में से निकल चुके हैं लेकिन थोड़ा सा बावापन बाकी रहा है, इसलिए यह खटपट करते रहते हैं। खटपट किसलिए? तो यह कि 'मैं जो सुख भोग रहा हूँ, वैसा सुख आपको भी प्राप्त हो।'

### बावा का करो समभाव से निकाल

बावा ने जो सुख माने थे, वे अब चखने नहीं पड़ते न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : जब तक बावा थे तब तक चखा। लेकिन अब तो बावा नहीं रहे न! बहुत अच्छे

इन्सान, बेस्ट इन्सान। जब सुख चखने की भावना हो न बावा को, तब उससे कहना, 'आप बावा, लेकिन मैं और तू दोनों जुदा है, साझेदारी नहीं। अब मैं बीच में हाथ कैसे डाल सकता हूँ? आप अपना प्रयत्न करो।' बावा होकर चख लिया वह अलग, गया। लेकिन अब निकाल (निपटारा) कर डालो। वर्ना फिर वह दावा करेगा। हमें यहाँ रहना पड़ेगा छः महीनों तक। कॉर्ट में फिर वकील ढूँढना पड़ेगा। इससे अच्छा तो आप खिसक जाओ भाई। समभाव से निकाल।

पहले जो हमें संसार की सभी इच्छाएँ खड़ी हुई, उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए अज्ञाशक्ति काम कर रही है। लेकिन अब अज्ञाशक्ति का जोर एकदम से नहीं बढ़ेगा। उसमें से अन्य दूसरी इच्छाएँ उत्पन्न हों, ऐसा नहीं है। यानी कि बीज में से बीज पड़े ऐसा नहीं है। जो है वही का वही और साथ में हमें प्रज्ञाशक्ति कहती है, 'मुझे निकाल कर ही डालना है इन सभी का। अब पेन्डिंग नहीं रखना है, निकाल यानी जिसे निपटारा करना कहते हैं न!

### फॉरेन में गए कि चेतावनी दे प्रज्ञा

जैसा चिंतन करे वैसा हो जाता है। इसलिए हमें क्या करना है? क्या होता है, उसे देखते रहना है, लेकिन वह कैसे? ज्ञानपने के दरवाजे पर खड़े रहना है। जिसे लोग प्रज्ञा कहते हैं। प्रज्ञा यानी क्या? ज्ञानपन का दरवाजा, जो यह होम (स्व) है और यह फॉरेन (पर), इस तरह अलग दिखलाती है। फॉरेन में जाते ही वह हमसे कहती है, 'फॉरेन चले क्या?' इससे फिर आप लौटकर प्रतिक्रमण कर लें कि अब नहीं। इस प्रकार अंत में तो वापस लौट ही जाते हैं। 'फॉरेन चले?' इस तरह चेतावनी देती है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : देती है।

दादाश्री : हाँ, फिर बस। वह हमें चेतावनी दे और हम वापस लौट आते हैं, ऐसा करते-करते

ही इसका हल निकल जाएगा। जो उपयोग 'पर' में चला जाता है उसे वापस 'स्व' में डाल दें। ऐसा करना है।

### रिस्पॉन्स से होता है चेतक मज़बूत

हम जब 'ज्ञान' देते हैं, तब फिर भीतर 'चेतक' बिठा देते हैं। अब आपको सिर्फ उसे मज़बूत कर लेना है।

चेतानेवाला जग गया तब वह उसे चेतवनी देता है कि, 'उधर नहीं, इधर आ, इधर आ।' चेतवनी देनेवाला चेतनेवाले से कहता है। 'उधर नहीं इधर वापस आ जाओ।' खुद की वृत्तियों रूपी जो चेतन है, उसे वापस बुलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** चेतवनी कौन देता है?

**दादाश्री :** ये जो वृत्तियाँ हैं न, वे ही। जो एक रूप होनेवाली होती है, वे।

यदि मूल आत्मा नहीं हो तो अंदर से चेतवनी बंद हो जाए। संसार में ये लोग भी आत्मा कहते हैं मगर उन्हें कोई बाप भी चेतवनी नहीं देता। इसलिए फिर उलझन में पड़ता है कि यह क्या है? उस समय अंदर से उसके विरुद्ध रिस्पॉन्स (प्रतिभाव) नहीं होना चाहिए क्या? आपको अंदर उसका रिस्पॉन्स मिलता है न? यदि रिस्पॉन्स नहीं दे तो फिर आप किसके यहाँ घंटी बजाएँगे? बजाते ही रहो न घंट! घंट सुनाई देता है और उसकी आवाज़ भी सुनाई देती है। वह तो पहले जैसा था वैसे का वैसे ही। मूल में वह परिवर्तन हो गया। और यदि कोई रिस्पॉन्स दे तभी उसके साथ कामकाज हो सकता है। वना यदि आप मुझे रिस्पॉन्स नहीं दो तो मैं कितने समय तक आपके साथ, 'चंदूभाई, चंदूभाई' करता रहूँगा? आपके कंधे पर हाथ डालता फिरूँ, उसमें मुझे स्वाद आएगा क्या? और यदि आप रिस्पॉन्स देते हो कि, 'मुझे क्यों छुआ?' तब मैं जानूँ कि 'हं, रिस्पॉन्स दे रहे हैं'।

**प्रश्नकर्ता :** रिस्पॉन्स यानी क्या?

**दादाश्री :** रिस्पॉन्स मतलब यह इसने कहा कि 'ऐसे' इस पर वह कहेगा, 'हाँ, ठीक है, राइट।' वह साइड पर घुमा मतलब वह राइट बिलीफ हुई। पहले वह रोंग बिलीफ हुई थी, अब राइट बिलीफ हो गई।

**प्रश्नकर्ता :** मतलब चेतानेवाले को आपके द्वारा राइट बिलीफ प्राप्त होती है न?

**दादाश्री :** ऐसा है न, मूल उसे यह रोंग बिलीफ है, तो फिर राइट बिलीफ कौन सी है? हम उसके ध्यान में लाते हैं जिससे उसे राइट बिलीफ बैठ जाती है, दृष्टि बदल जाती है। जैसे मैं आपको उल्टी दिशा में घुमा दूँ तो आपकी दृष्टि बदल जाएगी न! तब आप कहेंगे कि, 'पहले तो ऐसा नहीं था, यह तो सारा समुद्र दिखाई देने लगा।' उसके बाद फिर रिस्पॉन्स आता है।

### प्रज्ञा करें, अलग ( जुदा )

**प्रश्नकर्ता :** अंदर से जो वार्तालाप होता है, वह भी प्रतिष्ठित आत्मा ही करता है न?

**दादाश्री :** यह जो प्रज्ञा स्वरूप है न, वह प्रज्ञा सारा काम कर ही लेती है। आत्मा को कुछ नहीं करना पड़ता। जब तक यहाँ संसार के कर्मरूपी हैं, तब तक प्रज्ञा है। कर्मरूपी खत्म हो गया कि प्रज्ञा बंद हो गई। तब तक प्रज्ञा कह देती है कि, 'भाई, आप जुदा और हम जुदा।'।

### यदि मौन रहे, तो अजागृति

**प्रश्नकर्ता :** प्रज्ञा यदि जागृति में नहीं होती तो चंदूभाई के साथ एकाकार कौन हो जाता है? चंदूभाई की दखलों में कौन तन्मयाकार हो जाता है?

**दादाश्री :** अजागृति। यानी कि नहीं बोलना, मौन रहना, वही दखल है। 'ज्ञाता-दृष्टा' नहीं रहे,

उसे ही मौन रहे कहते हैं। अजागृति का मतलब ही दखल है। और कौन तन्मयाकार होगा? उसे फिर मिठास भी लगती है, अर्थात् उसे ही तन्मयाकार हो गए कहा जाएगा न!

**प्रश्नकर्ता :** किसे मिठास बर्तती है?

**दादाश्री :** यह जो उसका डिस्चार्ज अहंकार है, उसे। अब वहाँ पर यदि 'देखनेवाला' होता तो दोनों अलग हो जाते हैं। इसका जो हिस्सा बाकी रहा, वह अगले जन्म की जमापूँजी रही। शेष बचा। और तीर्थकर निःशेष होते हैं। इसका शेष बचा फिर वापस भागाकार करना पड़ेगा। शेष नहीं बचे, वैसा होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** उदयकर्म और चंदूभाई, वे दोनों अलग-अलग हैं क्या? क्योंकि आपने कहा न कि चंदूभाई उदयकर्म में दखल करते हैं, लेकिन हम उसमें सम्मिलित नहीं होते।

**दादाश्री :** चंदूभाई तो दखल करेंगे। वह तो, उदयकर्म में दखल करवाने का स्वभाव ही है अज्ञानता का। चंदूभाई अर्थात् अज्ञानता और उसका स्वभाव ही दखल करने का है। लेकिन उसे यदि हम 'जानें' तो दोनों अलग हैं। जानते नहीं अर्थात् मौन रहते हैं और मौन रहे अर्थात् उसमें हस्ताक्षर हो गए!

**प्रश्नकर्ता :** हम तन्मय हो गए, उसमें एकात्म हो गए और मौन (रहे), तब तो फिर उसमें एकाकार हो गए, ऐसा?

**दादाश्री :** अरे, (सामनेवाले को) धमकाता है फिर भी पता नहीं चलता कि मैं यह गलत कर रहा हूँ। बोलो अब, कैसे-कैसे बड़े उदयकर्म चले जाते होंगे!

**प्रश्नकर्ता :** उदयकर्म में जो दखल हो रही हो, उस घड़ी मौन रहे यानी हस्ताक्षर हो गए। इस तरह से वहाँ पर मौन रहना, ऐसा नहीं होना चाहिए?

**दादाश्री :** उदयकर्म में जैसा हो वैसा होने दे न! कुछ करने का तो रहा नहीं, अब 'जानना' बाकी रहा। मौन मतलब क्या? उदयकर्म आमने-सामने लड़ते हैं उसे आपने 'देखा' नहीं इसलिए मौन रहे। उपयोग में नहीं रहे इसलिए प्रमाद में गया। वह मौन रहना वही प्रमाद है। आपको अगले जन्म की जमापूँजी भी चाहिए न! सबकुछ खर्च कर देंगे तो चलेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** और यदि वह मौन नहीं रहता, तो कैसा रहता है?

**दादाश्री :** अलग हो जाते हैं दोनों। चंदूभाई उसके साथ दखल कर रहा हो, उसे हमने 'देखा' और 'जाना', तो हम भी छुट्टे और चंदूभाई भी छुट्टे। चंदूभाई को फिर कर्म का कोई कारण रहा नहीं और हमें भी नहीं रहा।

**प्रश्नकर्ता :** जब मौन नहीं होता तब क्या होता है, जिसे आप जागृति कहते हैं, उसका विरोधी शब्द क्या है?

**दादाश्री :** जागृति! अजागृति को मौन कहते हैं, हम। जब जागृति नहीं रहे, वही प्रमाद। जागृति मतलब अप्रमाद।

**निरंतर उपयोग में रहने से एक अवतार में मोक्ष**

**प्रश्नकर्ता :** उस अभ्यास से उपयोग रह सकता है न?

**दादाश्री :** मनुष्य को अभ्यास तो चाहिए न? अभ्यास मतलब खुद जागृति में तैयार रहना।

**प्रश्नकर्ता :** वह क्या कहा?

**दादाश्री :** जागृति यों ही चली जाए। गलत हुआ, गलत हो रहा है मगर (खुद) कुछ अभ्यास नहीं करता है। जागृति दिखलाती ही रहती है न कि, गलत हो रहा है। तुझे जागृति दिखलाती है कुछ?

**प्रश्नकर्ता :** दिखलाती है ऐसा सब।

**दादाश्री :** पूरे ही दिन? कितनी ऊँची जागृति हुई? दुनिया खोजती है मगर ऐसी जागृति नहीं रहती। वैसी जागृति निरंतर रहे, मैंने आपको ऐसी जागृति दी है। उस जागृति का उपयोग करना है। ज़रा पहले की आदत पड़ी हुई है न! इसलिए चिकनी जगह पर फिसलने की आदत पड़ी हुई है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, सही बात है।

**दादाश्री :** तो वहीं पर ज़रा जागृति रखनी है कि यह चिकनी जगह है और फिसल जाए ऐसा है और फिर भी उदय में आया है इसलिए हमें कहना है कि 'चंदूभाई तू फिसल रहा है और मैं देख रहा हूँ' इसमें हर्ज है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** लेकिन यह तो फिसल ही जाता है, वह खुद भी चंदूभाई के साथ फिसल जाता है, अतः वहीं उपयोग रखना है। जिस प्रकार कुएँ पर गया हुआ आदमी अपनी वाइफ को याद करेगा, बच्चों को याद करेगा या कुएँ को याद करेगा? कुएँ पर बैठना हुआ तो सावधान रहेगा न?

या फिर किसी समुद्र के बीच से दो फुट का रास्ता बना हुआ हो, जिसके दोनों ओर रेलिंग नहीं हो, और उस पर से गुजरना हुआ तो उस समय वाइफ याद आएगी, लक्ष्मी याद आएगी या बंगला याद आएगा? क्या याद आएगा?

**प्रश्नकर्ता :** कोई याद नहीं आएगा।

**दादाश्री :** हं, वही उपयोग है। दादा ने सिद्धांतपूर्वक एक अवतारी मोक्षमार्ग दिया है, तो फिर उस सिद्धांत को हमें पकड़े रहना चाहिए। उपयोग उसी में रखना चाहिए और वहाँ समुद्र में गिरा तो एक ही अवतार का मरण होता है, जबकि

यहाँ लाखों अवतार का मरण होता है। इसलिए अंदर चंदूभाई से कहना चाहिए कि 'सीधे रहो।'

**बातचीत के प्रयोग से साधी जा सके प्रगति**

उपयोग किसे कहते हैं? जब हजार-हजार के नोट गिन रहा हो, तब वहाँ से उसका उपयोग दूसरी जगह पर जाता है क्या? वह उपयोग कहलाता है। वैसा उपयोग हमें निरंतर रहता है। हमारी उपस्थिति में रहने से आपका भी उपयोग रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** इस पद में या दूसरे में अलग-अलग हद तक रुचि रहती है, इसलिए ऐसा होता है न?

**दादाश्री :** रुचि को पोषण देने की ज़रूरत नहीं है। आपको तो उपयोग रखना है। हमें तो कह देना है कि 'चंदूभाई, दादा के दरबार में बैठे हो, अब यहाँ पर जो-जो चल रहा है उसमें आप उपयोग रखकर चलो।' फिर आपको 'देखते' रहना है, उपयोग चूक गए तो तुरंत कहना है, 'चंदूभाई चूक गए, ऐसा नहीं होना चाहिए।'

प्रगति नहीं करनी है क्या मेरी उपस्थिति में? वर्ना तो, ऐसा कहते ही फाइल नं १ के साथ बातें करने लगते।

**सामने बिठाकर, डाँटो चंदूभाई को**

**प्रश्नकर्ता :** अंदर तो मेरी बातचीत घंटों तक चलती है।

**दादाश्री :** लेकिन अंदर बातचीत करते हुए अन्य फोन ले लेते हो, इसलिए उन्हें सामने बिठाकर ऊँची आवाज़ में बातचीत करना, ताकि अन्य कोई फोन ले ही नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** खुद को सामने किस तरह बिठाएँ?

**दादाश्री :** तू 'चंदूभाई' को सामने बिठाकर डाँटता रहेगा तो 'चंदूभाई' बहुत समझदार हो जाएँगे।



तू खुद ही डाँटे कि 'चंदूभाई, ऐसा तो होता होगा? यह आपने क्या लगा रखा है? और कर ही रहे हो तो अब सीधा करो न!' ऐसा हम कहें तो क्या गलत है? कोई लपलपाए (ताना मारेगा) तो अच्छा लगेगा? इसलिए हम आपको 'चंदूभाई' को डाँटने का कहते हैं। वर्ना बिल्कुल अंधेर ही चलता रहेगा।

### अरीसा सामायिक

आप कभी अरीसा (दर्पण) में देखकर चंदूभाई को डाँटते हो? आपको दर्पण के सामने चंदूभाई को बिठाकर कहना है कि 'आपने किताबें छपवाई, ज्ञानदान किया, वह तो बहुत अच्छा काम किया, लेकिन आप ऐसा करते हो, वैसा करते हो, ऐसा किसलिए करते हो?' ऐसा खुद अपने आप से कहना पड़ेगा या नहीं? सिर्फ दादा ही कहते रहेंगे, उसके बजाय आप भी कहो तो वे बहुत मानेंगे, आपका अधिक मानेंगे। मैं कहूँ तब आपके मन में क्या होगा? मेरे साथवाले पड़ोसी हैं 'वे' मुझे नहीं कहते, और ये दादा मुझे क्यों कह रहे हैं? अतः आपको खुद को ही *ठपका* देना है। औरों की सभी भूलें निकालनी आती हैं और खुद की एक भी भूल निकालनी नहीं आती। लेकिन आपको तो भूलें नहीं निकालनी हैं, आपको तो चंदूभाई को डाँटना ही है ज़रा। आप तो खुद की सभी भूलें जान गए हो। इसलिए अब 'आपको' चंदूभाई को *ठपका* देना है, वे नरम भी हैं, फिर मानी भी उतने ही हैं, हर प्रकार से 'मानवाले' (हिसाब) है। इसलिए उन्हें ज़रा पटाएँ तो बहुत काम हो जाए।

तुम्हें 'चंदूभाई' को दर्पण के सामने बिठाकर यों ऐसा प्रयोग करना चाहिए। दर्पण में तो मुँह वगैरह सब दिखता है। फिर आप 'चंदूभाई' से कहें 'आपने ऐसा क्यों किया? आपको ऐसा नहीं करना है। पत्नी के साथ मतभेद क्यों करते हो? नहीं तो फिर शादी क्यों की? शादी करने के बाद ऐसा क्यों करते हो?' ऐसा सब कहना पड़ेगा। ऐसे दर्पण में देखकर *ठपका*

दोगे, एक-एक घंटा, तो बहुत शक्ति बढ़ जाएगी। (*ठपका* सामायिक आज्ञा लेकर ही करनी चाहिए) यह सामायिक बहुत उच्च प्रकार की है। आपको चंदूभाई की सभी भूलों का पता चलता है न? जितनी भूलें दिखें, उतनी चंदूभाई को दर्पण के सामने एक घंटे तक बिठाकर बता दीं तो वह सामायिक सबसे उच्च कहलाएगी।

### दोषों के सामने अब शुरू कर दो पुरुषार्थ

बहुत सारे दोष दिखे ऐसा कुछ करो, मेहनत कड़ी है! आपको, जो आपका स्वरूप है, वह स्वरूप और चंदूभाई अलग। चंदूभाई का कंधा थपथपाओ। चंदूभाई कुछ अच्छा करके आए हों, उस दिन कहो कि 'आपने तो इतनी उम्र में अच्छा लाभ उठाया, आप छूटोगे तो हमें छोड़ोगे। आप जब तक लिपटे रहोगे, तब तक हमारा निपटारा नहीं होगा।' इसलिए आपको कहना है कि 'जल्दी काम पूरा करके सत्संग में जाओ।' 'चंदूभाई ऐसा करो, वैसा करो,' बल्कि इस तरह कहना है। आप तो ऊपर (बॉस) हो गए हो। और 'बच्चों के साथ इतनी हाय-हाय क्यों करते हो?' ऐसा आपको कहना चाहिए। कौन से जन्म में बच्चे नहीं थे। कुत्ते-बिल्ली में भी, बिना बच्चों के तो एक भी जन्म गया नहीं है न। अरे, नहीं हैं ये सचमुच में बच्चे! ये तो लौकिक चीज़ें हैं। क्या यह सचमुच का है?

### साफ करो प्रतिक्रमण से

**प्रश्नकर्ता :** व्यापार में और सभी जगह पर ऐसी सभी बेकार की बातों में, निरर्थक बातों में ध्यान और समय बहुत बिगड़ जाता है।

**दादाश्री :** बेकार की बातें, बेकार ही बिलोना बिलोते रहते हैं, लेकिन क्या कभी आपने कहा कि 'चंदूभाई, बेकार ही ऐसे समय क्यों बिगाड़ते हो, बिना बात के?'

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन वह तो दो घंटे बीत

जाने के बाद में कहता है फिर तो बाद में एकाध प्रतिक्रमण कर लेता हूँ।

**दादाश्री :** और प्रतिक्रमण की ओर भी ध्यान न दे तो हमें ऐसा कहना चाहिए कि, 'हे चंदूभाई, बैठ जा सामने। देख, व्यर्थ ही यों समय बिगाड़ रहा है, इससे तेरे हाथ में क्या आया? बोल।' तो तुरंत अपने आप ही ठिकाने पर आ जाएगा। क्या चंदूभाई अनपढ़ हैं? पढ़े लिखे इन्सान है!

आपको तो पड़ोसी के नाते चंदूभाई से ऐसा कहना है, कि 'ऐसे दोष करके क्या आप छूटनेवाले हो? आपको हम से अलग होना है और आपको साफ-सुथरा होना है। इसलिए आप प्रतिक्रमण करो।' अतिक्रमण हुआ हो तो प्रतिक्रमण करें। अच्छा हुआ तो प्रतिक्रमण नहीं करना है।

**प्रश्नकर्ता :** अतिक्रमण अन्य के लिए नहीं बल्कि खुद अपने लिए भी हो सकता है?

**दादाश्री :** खुद का तो अपने शुद्धात्मा के समक्ष करना है। हमें क्या कहना है कि 'हे चंदूभाई, प्रतिक्रमण करो, भाई आप क्यों ऐसी भूलें करते हो?'

### कतना अच्छा उपाय

शूट ऑन साइट। दोष दिखा कि 'चंदूभाई चलो, प्रतिक्रमण करो' कहना है। अब आपको चंदूभाई का दम निकाल लेना है। तब चंदूभाई कहेंगे, 'इस बुढ़ापे के कारण नहीं हो पाता,' तब आप कहना, 'हम तुम्हें शक्ति देंगे।' तब वह कहेगा, 'दीजिए।' तब फिर आपको बुलवाना है, 'बोलो! मैं अनंत शक्तिवाला हूँ' आप जब ऐसा बुलवाते हैं न, तब शक्ति वापस अपने आत्मा से उसमें जाती है फिर से। कंटाल गए (ऊब गए) हो तब भी हमें करना पड़ेगा न! वह पड़ोसी जो है!

### कंधा थप-थपाकर देना आश्वासन

किसी दिन चंदूभाई थोड़े ढीले पड़ जाएँ, तो

कंधा थपथपा देना। कोई कंधा थपथपानेवाला मिला ही नहीं है न। इन्सान कितना परेशान हो जाता है बेचारा!

आप शुद्धात्मा और यह है चंदूभाई अब आप दो हो गए, एक से दो हो गए। अब आपको चंदूभाई की देख-भाल करनी है, पड़ोसी की तरह और चंदूभाई को यदि कोई मुश्किल आ जाए तो आप चंदूभाई का कंधा थपथपा देना कि हम हैं न आपके साथ। पहले अकेले थे, निराधार थे। अब आधारवाले हुए। पहले तो निराधार थे। किसके पास जाकर रोते? पत्नी के पास जाकर रोए तो पत्नी उल्टा समझे, माँ-बाप के पास तो रो नहीं सकते।

पाँच लाख का नुकसान हो जाए और पिता को जाकर बताएँ तो वे कहेंगे, 'पाँच लाख का घाटा हो गया? तुझमें बरकत ही नहीं है।' अरे भाई, वह आश्वासन लेने आया तो फिर भी यह हाल किया! यदि पत्नी से कहे, उसे लगा कि शायद पत्नी मुझे आश्वासन देगी, मेरा आधा अंग है न, अर्धांगना मुझे आश्वासन देगी। तब वह कहेगी, 'हम तो आपसे रोज़ कहते थे कि ज़रा दुकान पर जाकर बैठो ये मेहताजी बराबर नहीं है।' अरे भाई, अभी मुझे जो आश्वासन चाहिए वह आश्वासन दे न! इसलिए अब आपको कंधा थपथपाकर यह आश्वासन देना है कि 'हम है'। ऐसा आश्वासन कोई नहीं देगा। अब देखो न, एक बार थपथपाकर आश्वासन देकर तो देखो। देखो। चंदूभाई दौड़ते हैं न! इस दुनिया में कभी भी कंधा थपथपानेवाला कोई मिला ही नहीं। ये जितने प्रयोग हमारे अनुभव के हैं न, वे सभी अनुभव आपको दे दिए हैं। जिन हथियारों का उपयोग मैंने किया है वे सब दे दिए।

हम दर्पण के सामने देखकर थपथपाते थे तो देखो ये सयाने हो गए हैं, ये छिहत्तर की उम्र में। यह छिहत्तरवाँ लगेगा यों ही नहीं निकाले हैं! कोई थपथपाता है? तेरे घर पर कोई थपथपाता है? कोई

नहीं थपथपाता। घर पर तो सभी अहंकारी, उल्टा ही बोलते हैं। ये तो कहेंगे, 'मैं तुझे पहले से ही मना कर रहा था, बेवकूफ़, देख आखिर मैं उल्टा कर दिया न तूने?' 'अरे भाई, इसलिए नहीं आया हूँ यहाँ, अभी तो मुझे आत्महत्या करने का मन हो रहा है, इसलिए मैं आपके पास आश्वासन लेने आया हूँ,' लेकिन तब भी चैन से नहीं बैठने देते। क्या होगा अब?

### हम हैं न आपके साथ

**प्रश्नकर्ता :** सभी प्रकार की परवशता से किस तरह हो सकते हैं?

**दादाश्री :** परवशता तो चंदूभाई को है, आपको नहीं है न? आपको चंदूभाई से कहना है, 'हम हैं तेरे साथ, तुझे कोई परेशानी हो? तो घबराना मत। तू लोगों के वश मत रहना। हमारे वश रहना। किसी के वश मत रहना।' ऐसा बोलना चाहिए। ये जुदापन की जागृति है, लेकिन यदि वैसा बोलना नहीं आए, तो यों दर्पण में दिखाकर बातचीत करनी चाहिए। तुझे दिखता है या नहीं दिखता? तुझे पसंद आया न? तुझे यह रास्ता पसंद आया न? हाँ, हमसे पूछे तो हम जो रास्ता अपनाते हैं, वही रास्ता आपको दिखाते रहे हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हम भी करें न!

**दादाश्री :** यदि (रास्ता) करना हो तो ये रहा दर्पण, कौन मना करता है? "मैं साथ में हूँ और 'दादा' का आशीर्वाद है। बोल क्या अड़चन है?" बस। तो हो जाएगा चुप। हम ऐसा ही करते थे। फिर भले ही पैर दुःख रहे हो, लेकिन पूरी रात निकल जाती थी। 'हम हैं न तेरे साथ।' इतना कहे, या उसके साथ बातें करते थे। नहीं तो आश्वासन देनेवाला और कोई है नहीं न! अभी यदि किसी आदमी को बहुत नुकसान हो गया हो और कोई कहेगा 'हम हैं तेरे साथ' तो उस बेचारे को रात को

नींद आ जाएगी, लेकिन ऐसा कोई कहनेवाला ही नहीं है न अभी तो?

**प्रश्नकर्ता :** हूँफ़ (सहारा) के बिना रह नहीं सकता, व्यथित हो जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, वही कह रहा हूँ न! इसलिए ये कहते हैं कि तू वीतराग बन जा! तुझे यह क्या झंझट है? इसलिए हम कहते हैं न, निर्भय बन जाओ। किसी की ज़रूरत नहीं है। हम ज्ञान देने के साथ ही उसे ऐसा कहते हैं कि 'भाई, तू शुद्धात्मा है'। अगर तू दर्पण में देखकर पीछे (कंधा) थपथपाएगा न! तो किसी और की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। फिर ज़रूरत पड़ेगी क्या? 'चंदूभाई, मैं हूँ आपके साथ' ऐसा कहें, फिर क्या शिकायत करेगा कोई?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं करेगा।

### पुरुषार्थ, स्वपरिणति में बर्तने का

भगवान को स्वपरिणति रहती थी। हमें भी स्वपरिणति रहती है। परपरिणाम को खुद का नहीं कहते। स्वपरिणति में ही रहने के लिए आपको भी हम ऐसा कहते हैं कि 'आपको' 'चंदूभाई' से व्यवहार संबंध रखना है। अन्य किसी के साथ व्यवहार रहा या नहीं भी रहा तो क्या? दूसरे लोग तो 'आपके' कमरे में सोने नहीं आते हैं। जबकि ये 'चंदूभाई' तो साथ में ही सो जाएँगे। अतः उनके साथ व्यावहारिक संबंध रखना, सिर या पैर दुःख रहा हो तो दबा देना। बातचीत करके आश्वासन देना। क्योंकि पड़ोसी है न!

ये कौन से द्रव्य के परिणाम हैं, वह समझ लेना है। *पुद्गल* द्रव्य के या चेतन द्रव्य के परिणाम हैं, उसे समझ लेना है। चोंच डूबते ही परपरिणाम और स्वपरिणाम जुदा हो जाने चाहिए।

जब हम ज्ञान देते हैं, उसके बाद परपरिणति बंद हो जाती है। लेकिन, देखना नहीं आता है

इसलिए मन के, बुद्धि के हंगामों में फँस जाता है और उलझता रहता है, 'सफोकेशन' (दम घुटना) अनुभव करता है। हमें तो बस इतना ही देख लेना है कि कौन सी परिणति है, स्व या पर। बाहर भले ही पाकिस्तान लड़ रहा हो, हमें कोई हर्ज नहीं है। इस प्रकार जिसे स्वपरिणति उत्पन्न हो गई, उसे परपरिणाम स्पर्श ही नहीं करता। ये मन के, बुद्धि के, चित्त के स्पंदन उत्पन्न होते हैं, वे *पूरण-गलन* (चार्ज और डिस्चार्ज होना) है। उनके साथ हमें लेना-देना नहीं है। इसमें आत्मा कुछ नहीं करता, *पुद्गल* ही करता है।

सुबह उठे, तभी से *पुद्गल*, उसके परिणाम में होता है और आत्मा उसके परिणाम में होता है। लेकिन यदि कभी मन अधिक स्पंदन कर रहा हो और ऐसा कहे कि 'मुझे ऐसा क्यों हो रहा है' तो फिर वापस वह भूत लिपटा। अतः 'आपको' उसे देखते रहना है और जानना है कि अभी आँधी ज़रा तेज चल रही है। ६५ मील की स्पीड से हवा चले, तो क्या घर-बार छोड़कर भाग जाएँ? वह तो चलती ही रहेगी। मोक्षमार्ग में जाने तक तो बहुत चक्रवात आएँगे, लेकिन वे बाधक नहीं हैं।

जिसे ये बाहर के परपरिणाम पसंद नहीं हैं, 'यूज़लेस' लगते हैं और उन्हें स्वपरिणाम नहीं मानता है, वही आत्मा की हाज़िरी है, वही स्वपरिणाम है।

### आत्मा के जुदा रहने की ज़रूरत

**प्रश्नकर्ता :** यह जो आपका जुदापन का प्रयोग है, वह किस तरह से होता है? क्या आपको वह आसानी से एक्ज़ेक्ट जुदा दिखता रहता है?

**दादाश्री :** वह तो दिखता है। यह *पुद्गल* भाग और यह चेतन भाग इस प्रकार से सबकुछ पहचान जाते हैं। ऐसी जागृति रहती है। जिस प्रकार लौकी की सब्जी बनानी हो तो जागृति रहती है न

कि छिलके अलग निकाल देने हैं, डंठल अलग निकाल देने हैं। फिर काट देते हैं फटाफट। उसी तरह से हम में जड़ और चेतन अलग ही रहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् जब कभी अकेले बैठे हों, तब चंदूभाई को देखते रहना है कि...

**दादाश्री :** दर्पण में देखकर रोज़ चंदूभाई से इस प्रकार कहना, तो आत्मा अलग होता जाएगा और प्रकृति से आत्मा जुदा हो गया तो काम हो गया। बोटल का कॉक यदि ढीला हो गया तो काम नहीं आएगा न? लोग कहते भी हैं न, 'ढीला हो गया है।' ढीला हो भी जाता है न? पर प्रकृति से आत्मा ढीला (अलग) पड़े, वह तो अच्छा है। आप अच्छी तरह बंद करें तो भी वापस छुट्टा का छुट्टा दर्पण में देखकर ज़रा पीछे (कंधा थपथपाकर) कहोगे न, तो आत्मा जुदा पड़ जाएगा। उसके बाद फिर हम मज़बूत करने जाएँगे तो भी नहीं होगा, ढीला पड़ गया है। दिया हुआ आत्मा शुद्धात्मा है, ढीला हो जाने पर और कोई खराबी साथ में नहीं आएगी। शुद्धात्मा दिया हुआ है इसीलिए अलग हो सकता है।

### चंदूभाई के हम ज्ञाता-दृष्टा

जैसा संग वैसा रंग लगता है। आत्मा 'असंग' है। तू 'असंग' है तो तुझे रंग नहीं लगता। चंदूभाई को लगता है। 'आप' तो 'जाना' करते हो।

ज्ञाता-दृष्टा रहने का मतलब क्या है कि 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं,' उसे आप जानते रहो। चंदूभाई ने बच्चे को थप्पड़ मारा और कलह कर रहे हों तो आपको जानना चाहिए कि चंदूभाई अभी भी कलह कर रहे हैं।

हमें चंदूभाई से कहना भी चाहिए कि बिना बात के क्यों कलह कर रहे हो? और कभी-कभी उसे *ठपका* भी देना चाहिए। 'चंदूभाई ऐसा किसलिए कर रहे हो? ज़रा सीधे हो जाओ न! अनंत अवतार से भटक रहे हो अब तो सीधे चलो।' शादी हुई तभी

से ऐसे के ऐसे हो, अब ज़रा सीधे हो जाओ न! दादा मिल गए हैं अब तो'!

**‘देखना’, किसे कहते हैं?**

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् हमें पूरे दिन के अंत में बैठकर चंदूभाई को देखना है और याद करके ऐसा कहना है कि तूने ‘आज सुबह ऐसा किया था। आज दोपहर को गुस्सा किया था।’

**दादाश्री :** हाँ, ये सब कह सकते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** उसी को ‘देखा’ ऐसा कहेंगे न? प्रकृति को देखा, ऐसा कहेंगे न?

**दादाश्री :** हाँ, ‘देखने’ के बाद हम ऐसा भी कहते हैं, कि ‘क्या ऐसा जो किया है वह शोभा नहीं देता। अब तो उम्र हो गई। अब तो मोक्ष में जाना है न?’

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। यानी गुस्सा हो गया हो तो आपको डाँटना है उन्हें कि ‘यह आप क्या कर रही हो? दादा के मिलने के बाद भी अभी भी ऐसा गुस्सा करती हो, यह शोभा नहीं देता।’

**दादाश्री :** हाँ, बस। ‘यह आपको शोभा नहीं देता।’ हाँ, डाँट सकते हैं, डाँट सकते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** इसे देखना कहलाएगा न?

**दादाश्री :** हाँ, इसे ‘देखना’ कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** इसे अनुभव कहते हैं?

**दादाश्री :** हाँ, यह अनुभव कहलाता है। आप थोड़ा-थोड़ा ऐसे कह सकते हो कि अब आपकी उम्र हो गई है, अब तो ज़रा सोचो ऐसे। सास यहाँ पर नहीं है, इसलिए रौब ज़मा रही हो! ऐसा कहना चाहिए। सास डाँटे तो क्या करोगे? ‘कोई कहनेवाला नहीं है, इसलिए आप ऐसा कर रही हो’ जितना कह सको उतना कहना। इसमें कहाँ आबरू जानेवाली है? आबरू तो गई हुई ही है न! आबरू गई हुई है

इसीलिए तो ये दादा मिले और आबरूदार लोग तो देखो कैसे घुम रहे हैं! उन लोगों को अंदर चिंता करनी है लेकिन बाहर आबरू रखनी है, बाहर आबरू नहीं जाने देनी है।

जिसे खुद के दोष दिखने लगें तभी से जानना कि अब हल आनेवाला है।

**जुदा देखने से होता है कचरा साफ**

मैं कुछ दिखलाने नहीं आऊँगा। आपको ही दिखलाना है। अब फिर से नहीं कहना पड़ेगा न मुझे? अब मुझे कहने नहीं आना पड़ेगा न। आपको ही कहना है, ‘चंदूभाई ऐसा करो, वैसा करो।’ अंदर का कचरा आपको रेग्युलर नहीं रहने देगा मतलब घर में कचरा है इसलिए ‘आपको’ उसे कह देना है कि, ‘चंदूभाई, देखो अभी भी कचरा है।’ तब चंदूभाई कहेंगे, ‘आपके शुद्ध होने से मुझे क्या फायदा?’ तब कहना, ‘हम शुद्ध हो जाएँगे तो तेरा ठिकाना पड़ जाएगा ही। यह तय है, उसकी गारन्टी है।’

**प्रश्नकर्ता :** शुद्ध तो हमें चंदूभाई को ही करना है न?

**दादाश्री :** ‘हं।’ ‘आप’ तो शुद्ध हैं ही। आप शुद्धात्मा हैं ही। अब चंदूभाई क्या कहते हैं कि ‘मैं भी शुद्ध हो गया हूँ।’ तब कहे, ‘नहीं, अभी तो बाहर का सब साफ हुआ है मगर अभी अंदर तो सारा कचरा पड़ा है, उसे बुहार दीजिए ताकि शुद्ध हो जाओगे।’ बर्तन साफ तो किए। जैसे-तैसे साफ तो किए इसलिए उसमें कहीं पर मिट्टी रह जाती है तब ‘ये तो गीले हैं।’ उस वक्त कहें कि धो दो ज़रा और धो दो।’

पूरा दिन आपको जीव उसी में लगाना है कि, ‘चंदूभाई क्या कर रहे हैं?’ चंदूभाई से कहते रहना है। चंदूभाई उस पर कैसा अमल करते हैं वह ‘देखना’ है और ऐसा नहीं करे तो आपको कहना है, ‘अभी ये बर्तन साफ नहीं हुए। अभी फलों रह गया।’ एक

को पूरा करे कि तुरंत दूसरा दिखलाना है। यानी चंदूभाई की भूलें आपको दिखाई दें तो आप चंदूभाई से कहना कि, 'ऐसी भूलें करते हो, लेकिन अब सुधार लो।' तभी तो उसका सीधा होगा वर्ना सीधा नहीं होनेवाला।

### यानी पुद्गल और आप दोनों जुदा

आप जितना अलग 'देखोगे' कि इसने गर्वरस चखा तब पुद्गल अलग हो जाएगा। वर्ना अलग नहीं रह पाएगा। इसलिए 'देखा' मतलब आप भी अलग और पुद्गल भी अलग पड़ जाता है।

अंदर जितने कषाय भरे हुए हैं वे निकलते ही रहेंगे, अंदर भरे हैं उतने। और आपको उन्हें देखते रहना है और फिर चंदूभाई से कहना, 'प्रतिक्रमण करो, फिर से चरणविधि बोलो।' उतना ही, और कुछ नहीं। आपको 'देखकर' निकाल करना है, उसे 'साफ किया' कहते हैं। घर में आप जाए तो वे कहेंगे, 'साहब, अब सब हो गया, अब इसका करार कीजिए' तब कहना, 'नहीं, अभी तो यह बाकी है' वह करता रहे और आप दिखलाते रहना।

उन्हें देखनेवाले आप हो और साफ करनेवाले वे हैं, घर के मालिक। साफ करने के बाद फिर वे कहें कि, 'अब मैं आराम करूँ?' तब कहना, 'नहीं, अभी तो यह बाकी है, सब पूरा हो जाने के बाद आराम करना।'

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, राइट।

**दादाश्री :** यदि उपयोग में रहे (ठीक से) तो फिर कुछ ही नहीं बाकी रहता। फिर कुछ कचरा बुहारने को रहता ही नहीं। उसी को ही 'साफ किया' कहते हैं। साफ हो गया हो तो उपयोग में रहा जा सकेगा और नहीं हुआ होगा तो उपयोग ठीक से नहीं रह पाएगा। थोड़ी देर रहेगा, और थोड़ी देर नहीं रह पाएगा।

### 'यह मैं नहीं हूँ' की जागृति ज़रूरी है

**प्रश्नकर्ता :** तो आपने ऐसा भी कहा है कि गर्वरस चख लिया, मगर उसे देखा कि इसने गर्वरस चखा तो फिर वह जुदापन हो गया कहलाएगा न?

**दादाश्री :** चखनेवाला वह 'मैं नहीं हूँ' ऐसा रहना चाहिए। यह जो चख रहा है वह 'मैं नहीं हूँ' और 'मैंने चखा' ऐसा कहे तो फिर खुद ही हो गया। उसका गर्वरस चखता है मगर उसके मन में ऐसा रहता है कि यह मैं ही हूँ। अब हमारा ज्ञान क्या कहता है? 'यह मैं नहीं हूँ' इतना ही कहता है। इतना समझकर वहाँ अलग रहना है और समभाव से निकाल करना है। 'मैं यह नहीं हूँ' करके समभाव से निकाल करना है।

**प्रश्नकर्ता :** कोई भी चीज़ जो मूल उपयोग में नहीं रहने देती, वह सब कचरा ही है।

**दादाश्री :** हाँ, उपयोग में रहने नहीं दे वह कचरा। जहाँ रहने दे, वहाँ कचरा खत्म हो गया है। आपको तो साफ करना भी नहीं होता है आपको तो 'देखना' है। अथवा तो जो कुछ आया वह 'मेरा स्वरूप नहीं' कहा, तो फिर अलग। दुःख आए, सुख आए, क्रोध आए, अन्य कुछ भी आए फिर भी जो कुछ भी आ रहा है, वह 'मेरा स्वरूप नहीं है' ऐसी जागृति रहनी चाहिए।

### आप अलग और हम अलग

हम शुद्धात्मा हैं और यह कर्म है। कर्म जो चीज़ है, वह परिस्थिति है। वह बदलती रहती है। अतः अगर हम 'आप जुदा और हम जुदा' बोलें, तो हम पर असर नहीं होगा। कर्म, कर्म का भाग भजता रहेगा, लेकिन असर नहीं होगा, अनइफेक्टिव। और उसमें हस्तक्षेप करें तो भी वह कुछ सुधरता नहीं है बल्कि अपना जो सुख है वह भी रुक जाता है। हस्तक्षेप करने की आदत जो पहले से पड़ी हुई है न, वह अभी भी जाती नहीं है न! आपको अब यह

आदत डालनी चाहिए, 'तू जुदा, मैं जुदा। मैं तुझे उसमें हेल्प करूँगा।' ऐसा कहना।

**'मेरा नहीं' है कहा कि छूटा**

**प्रश्नकर्ता :** उन कर्मों की इफेक्ट भी बहुत अरुचिकर हो जाती है।

**दादाश्री :** वह तो आप उन्हें अंदर स्पर्श होने देते हो इसलिए अरुचि होती है न! कभी भी जब उसका स्पर्श हो तब तुरंत उसे कहना कि 'मेरा नहीं है,' तो कुछ भी नहीं होगा। एक बार कहकर तो देखो! ऐसा पाँच-पच्चीस बार बोलकर देखो, फिर प्रेक्टिस (आदत) हो जाएगी। 'मेरा नहीं है' यह तो चंदूभाई का है 'चंदूभाई, तेरा दुःख भी हम नहीं लेते।' ऐसा कहना 'मेरा नहीं है' कहा कि तुरंत जुदा। अपना है ही नहीं, जो अलग हो गया, उसे 'मेरा नहीं है' ऐसा कहने में हर्ज क्या है?

जब सफोकेशन (दम घुटना) हो जाए तो कहना, 'नहीं है मेरा' यद्यपि सफोकेशन बहुत नुकसान नहीं पहुँचाता लेकिन सुख आना रुक जाता है न! जुदा करने के बाद जो अपना नहीं है उसे अपना कैसे कह सकते हैं? वर्ना पहले तो कहते ही थे न, 'यह मेरा, यह मेरा।' 'यह मेरा' ऐसा नहीं कहते थे क्या? अब जो 'अपना नहीं है' ऐसा नक्की किया है इसलिए फिर वह 'अपना नहीं है' ऐसा कहा कि उसी क्षण अलग। यदि किसी के लिए अंदर गुस्से के परमाणु आए हों, चंदूभाई को, तो उसी घड़ी आप कहो कि, 'मेरा नहीं है' तो अपने आप ठंडा पड़ जाएगा तुरंत। लेकिन आप पर असर नहीं होगा। शायद उबल पड़े फिर भी आप पर असर नहीं होगा। जो खुद का नहीं है उसे 'नहीं है अपना' ऐसा कहना है, जबकि ये लोग तो जो उनका 'खुद का' नहीं है, उसे 'खुद का' कहते हैं। जो आपका नहीं है उसे 'नहीं है' कहते हो और जो खुद का है, उसे 'है' कहते हो। इस तरह आप सीधे, डायरेक्ट बात करते हो।

**शॉक लगे, वह सीट मेरी नहीं है**

**प्रश्नकर्ता :** वह जो दूसरी (पर की) सीट में बैठ जाते हैं, वहाँ पर किस तरह नहीं बैठें और आत्मा को ही उसमें (आत्मा) किस तरह पकड़े रहें? अर्थात् कर्तापने में आ जाते हैं बार-बार।

**दादाश्री :** उस सीट पर बैठ गए और शॉक लगे तो जानना कि यह अपनी नहीं है। और शॉक लगे तो उठ जाना चाहिए। जहाँ शॉक लगे वह कुर्सी अपनी नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** शॉक लगने परने भी उठता नहीं है, तो उठेगा किस तरह? क्योंकि उससे ज्ञाता-दृष्टा नहीं रहा जाता, तो वैसा किस प्रकार से रहना है?

**दादाश्री :** उठता नहीं है, उसे आप देखते हो न! जो उठता नहीं है, वह आप नहीं हो। एक 'चंदूभाई' है और एक 'आप' हो। जो उठते नहीं हैं, वे चंदूभाई हैं। चंदूभाई से कहना, "चलो सोए रहो। बैठना हो तो बैठ जाओ भाई, यदि अच्छा लगे तो! मैं 'देखता' रहूँगा और आप बैठे रहो।" सोल्युशन (उकेल) तो होना चाहिए न!

**प्रश्नकर्ता :** इसका मतलब है कि जो कुछ होता है, उसकी नोंध करते रहे?

**दादाश्री :** सभी क्रियाओं को 'देखना' है। वह यदि किच-किच कर रहा हो तो उसे भी फिर देखना है आपको कि, 'यह भी मेरा स्वरूप नहीं है,' कहना।

**प्रश्नकर्ता :** मतलब जो किच-किच करता है, वह कौन सा भाग है?

**दादाश्री :** वह दूसरा भाग है, वह चंदूभाई के पक्षवाला।

**प्रश्नकर्ता :** यानी वह जो किच-किच करता है, उसे भी देखना है?

**दादाश्री** : उसे भी देखो।

**प्रश्नकर्ता** : यानी जो देखता है, वह तो कुछ बोलता ही नहीं, सिर्फ देखता ही है।

**दादाश्री** : जो देखता है उसका ऊपरी कोई नहीं है। उसे कोई डाँटनेवाला नहीं होता, कुछ भी नहीं होता। अनंत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं, लेकिन चंदूभाई का रक्षण करते हो न, इसलिए सभी शक्तियाँ आवरण में छुपी रहती हैं। रक्षण करते हो न चंदूभाई का? खुले आम करते हो न? इसीलिए शक्तियाँ खिलती नहीं हैं। यदि इन आज्ञाओं का पालन करते रहोगे न, तो भी समाधि कभी जाएगी नहीं। आप अपनी कुर्सी पर और चंदूभाई उनकी कुर्सी पर बैठे रहेंगे। आप चंदूभाई की कुर्सी पर बैठने जाते हो, उसी की ये परेशानी है। पहले से यह आदत पड़ी है न ऐसी!

आपको तो बाहर से हटकर खुद की सीट पर बैठना है। अब अपनी सीट कौन सी है? अंदर चार-पाँच तरह की सीटें हैं। तो अपनी कौन सी सीट है कि जहाँ पर एकदम ईज्जी लगे, वह अपनी सीट। थोड़ी भी चुभन लगे तो जानना कि यह दूसरी सीट आई। चुभे तो जानना या फिर शॉक लगे तो समझ जाना कि यह शॉक लगा। ऐसी सभी सीटों पर मत बैठना। अपनी सीट पर बैठें।

**सावधान करते रहना, 'बिबेयर'**

**प्रश्नकर्ता** : रिलेटिव की कुर्सी पर इतना जोरदार शॉक नहीं लगता इसलिए पता नहीं चलता। उसमें बैठे ही रहते हैं वहाँ।

**दादाश्री** : हाँ, लेकिन वह मीठा लगता है, सुखद लगता है लेकिन जीभ भी कटती है ज़रा। यानी कि तलवार की धार पर शहद रखा होता है न, वह मीठा तो लगता है लेकिन जीभ भी कटती है। बीच-बीच में जलन भी होती है, दोनों साथ में चलता है।

**प्रश्नकर्ता** : दादा, रिलेटिव की कुर्सी में जब झटका लगता है, तब कभी-कभार एकदम उठ जाते हैं और दादा याद आ जाते हैं।

**दादाश्री** : हाँ, लेकिन ऐसा हो जाता है न, यानी कि थोड़ा बहुत तो उठे न! उठने का भाव तो हुआ न! लेकिन यदि इस स्वभाव को जो पहचाने, तो वह तुरंत उठ जाएगा कि 'यह नहीं है, यह नहीं है, यह भटक गया।' जिस तरह हम इलेक्ट्रीक वायर को हाथ लगाए और शॉक लग रहा हो तो फिर हम क्या कहते हैं कि 'देखना, उसे मत छूना।' उसी तरह इसे भी सावधान करते रहना है, बिबेयर। उस चारसौ वॉल्टवाले से तो सिर्फ मृत्यु हो लेकिन यहाँ तो अनंत जन्मों का मरण होता है! इसलिए बहुत बड़ा बोर्ड लगाकर रखो। यदि आत्मा प्राप्त हो गया हो तो, वर्ना बाहर तो किसी को भी कुछ कह नहीं सकते। आपको रिलेटिव और रियल दोनों कुर्सी का पता चल गया है इसलिए कह सकते हैं। बाहर बात करने से कोई फायदा नहीं है।

**अपनी कुर्सी पर बैठकर 'देखते रहना'**

कोई-कोई तो मक्खन लगाता है, 'चंदूभाई साहब, आप तो बहुत लायक इन्सान हो, बहुत अच्छे हो।' लेकिन जब वह लगाए तो हमें लगवाने देना है? चंदूभाई, वह अपनी सीट नहीं है, वहाँ से तो दादा ने हटा दिया है। 'मैं चंदूभाई हूँ' मानते थे, इसीलिए तो मार खा रहे थे।

थोड़ा सा भी भोगवटा आए तो समझ में आता है कि मैं दूसरी सीट पर बैठा हूँ, यह सीट मेरी नहीं है। तब वहाँ से उठकर वापस शुद्धात्मा की सीट पर बैठ जाना।

यह जगत् परेशान रहने योग्य नहीं है। यदि कोई उलझन हो या शरीर में कुछ परेशानी शुरू हो, कि तुरंत अपनी कुर्सी पर बैठ जाना। उसे 'देखते' रहना, 'चंदूभाई, क्यों परेशान हो रहे हो आप?' कहना।



**‘मेरा नहीं है’ शब्दों का साइन्टिफिक असर**

**प्रश्नकर्ता :** सबकुछ करने के बावजूद भी जब सामने से दबाव आता है, तब दबाव का असर शरीर पर और ऐसे ही अंदर के अंतःकरण पर दिखे तो ऐसे वक्त क्या करें?

**दादाश्री :** किसी भी समय कुछ भी आ जाए, चाहे कैसा भी उलझा हुआ हो, घंटेभर से असंमजस में हो लेकिन जैसे ही कहो कि, ‘मेरा नहीं है’ कि छुट्टा। क्योंकि ‘यह तुम्हारा’ और ‘यह मेरा’ ऐसा विभाजन किया हुआ है, हमने बँटवारा किया है। उस समय उसे कहा हुआ है कि ‘भाई, यह मेरा नहीं है, यह मेरा और यह तुम्हारा’।

**प्रश्नकर्ता :** जो संयोग आए उन संयोगों का अनुसरण करके प्रकृति तो ऊपर-नीचे होती ही रहेगी, ‘मेरा नहीं है’ कहा तो भी उस पर कुछ कंट्रोल तो नहीं रहता न?

**दादाश्री :** लेकिन ‘मेरा नहीं है’ कहा, मतलब अलग हो जाता है, ऐसा ज्ञान दिया है उन्हें। ज्ञान नहीं दिया हो उसे नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** उसका मतलब यह ‘मेरा नहीं है’ कहा, उसके साथ हम ऐसे ज्ञाता-दृष्टा भाव में ही हों इस तरह हम रास्ता निकालते हैं।

**दादाश्री :** नहीं। वह अंदर से ज्ञाता-दृष्टा रहा जाए या नहीं रहा जाए वह अलग बात है, लेकिन ‘नहीं है मेरा’ कहने से वह अलग हो जाता है। इन शब्दों से तुरंत बहुत साइन्टिफिक असर हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** बहुत अच्छा लगा दादा।

**दादाश्री :** कहीं पर भी उलझन खड़ी हुई?

**प्रश्नकर्ता :** ज़रा सी भी नहीं। निबेड़ा आ गया।

**दादाश्री :** बल्कि जो उलझन थी उसका निबेड़ा आ गया। है न? तो अब इसका ध्यान रखना।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** ध्यान रखना। सुननेवाला अलग, ध्यान नहीं रखनेवाला अलग और आप भी अलग हो फिर। इसलिए हमने जो कहा है उसे ‘ध्यान रखना।’ क्योंकि हम जानते हैं आगे का, इसे कहनेवाला कौन है, वह! ताकि आपको उस झंझट में पड़ना ही नहीं पड़े। आप तो दादा के कहे अनुसार चलो। चंदूभाई से आपको कहना है, ‘‘हम’ देखेंगे और आप दादा के कहे अनुसार चलते रहो।’ ‘आप ध्यान रखना’ कहो, उसके बजाय ‘दादा के कहे अनुसार ध्यान में रखना’ ऐसा कहना। आपको उलझन हो ऐसा ज्ञान निकाल दिया। आप चंदूभाई से कहो कि, ‘ध्यान रखना।’ तो फिर वापस वह कहेगा कि, ‘यह कहनेवाला कौन है यहाँ पर?’ ऐसा प्रश्न खड़ा होगा न? फिर अगर अंदर पूछे न कि ‘यह कौन कह रहा है?’ आप कहना, ‘मैं कह रहा हूँ।’ लेकिन ‘मैं कौन?’ मतलब दादा यह कह रहे हैं, ऐसा कहो तो कोई परेशानी नहीं रहेगी। दादा के नाम से निकाल दो। दादा की ज़िम्मेदारी पर है। लेकिन दादा खुद ज़िम्मेदारी समझकर खुद जुदा रखकर ही बोलते हैं। क्या आपको पूरी तरह से समझ में नहीं आया?

**प्रश्नकर्ता :** दादा, समझ में आया। यानी कुल मिलाकर यह सब माइनस करना है, ‘यह मैं नहीं हूँ, मैं नहीं हूँ, मैं नहीं हूँ।’ इसलिए फिर मैंने ऐसा बैलन्स रखा है कि ‘यह सीट मेरी नहीं है’ कहकर हट गए, लेकिन फिर तुरंत अपनी सीट, जो कि ‘जाननेवाले’ की है, उस सीट पर बैठ जाना है, ताकि एक तरफा साइकोलॉजी (मनोविज्ञान) नहीं हो जाए।

**दादाश्री :** उस घड़ी यदि आनंद रहे तो जानना कि हम करेक्ट रास्ते पर हैं।

**जय सच्चिदानंद**

## कषायों से कर्म बंधन

**प्रश्नकर्ता :** नाम के प्रति मोह किस लिए है?

**दादाश्री :** कीर्ति के लिए! उसी की तो सारी मार खाई है अब तक! नाम का मोह, वह कीर्ति कहलाता है। कीर्ति के लिए मार खाई। अब, जब कीर्ति के बाद अपकीर्ति आए, तब भयंकर दुःख होता है। इसलिए कीर्ति-अपकीर्ति से हमें परे होना है। नाम का भी मोह नहीं चाहिए। खुद अपने आप में ही अपार सुख है!

मान और क्रोध, वे दोनों द्वेष हैं और लोभ व माया, वे राग हैं। कपट, राग में जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** किसी के भय की वजह से कपट करना पड़े तो?

**दादाश्री :** उसमें हर्ज नहीं है। वह दूसरे को बहुत नुकसान करनेवाला नहीं है न? कपट, 'सामनेवाले को कितना नुकसान करता है', उस पर आधार रखता है। अभी आप सत्संग में जाने के लिए कपट करो तो वह कपट नहीं माना जाएगा, क्योंकि कुसंग तो भरपूर पड़ा हुआ है ही।

**प्रश्नकर्ता :** यह कपट का निमित्त आया, तभी कपट का भाव हुआ न?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** क्या भावकर्म बंधवाने के लिए कपट का निमित्त आता है?

**दादाश्री :** सिर्फ कपट ही नहीं, उसमें क्रोध-मान-माया-लोभ, चारों ही आ जाते हैं। उससे उसका अंधा दर्शन खड़ा हो जाता है। इसलिए ऐसे दर्शन के आधार पर ही वह सारे काम करता है। यह जब हम ज्ञान देते हैं, तब उस दर्शन को तोड़ते हैं। कितने ही पाप भस्मीभूत होने पर वह दर्शन टूटता है, और वह दर्शन टूटा कि काम हो गया!

इन क्रोध-मान-माया-लोभ के कारण संसार खड़ा रहा है, विषयों के कारण नहीं खड़ा है। संसार का 'रूट कॉज' ये क्रोध-मान-माया-लोभ हैं।

**प्रश्नकर्ता :** क्रोध-मान-माया-लोभ आएँ, उस समय स्वयं जागृत अवस्था में रहे, तो फिर उसका बंध नहीं पड़ता न?

**दादाश्री :** जागृति रहे किस तरह? वह खुद ही अंधा है, उसने दूसरों को अंधा बनाया है। जब तक उजाला नहीं होता, समकित नहीं होता, तब तक जागृत नहीं कहलाएगा न! समकित हो जाने के बाद काम होता है। जब तक समकित नहीं होता तब तक संयम भी नहीं है। वीतरागों का कहा हुआ संयम कहीं भी नहीं है, यह तो लौकिक संयम है।

संयम किसे कहते हैं? विषयों के संयम को त्याग कहा है। भगवान ने सिर्फ कषाय के संयम को संयम कहा है। कषायों के संयम से ही यह छूटता है, असंयम से तो बंधन है। विषय तो समकित होने के बाद भी रहते हैं, परंतु वे विषय गुणस्थानक में आगे नहीं बढ़ने देते, फिर भी उसमें हर्ज नहीं है, ऐसा कहा है। क्योंकि उससे कहीं समकित चला नहीं जाता।

( परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित )

**दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स**

**१५-२८ अगस्त : आईस्टार शिविर :** एन.आर.आई टीनेजर्स युवक-युवतियों के लिए दो वीक के विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें यू.एस.ए., यू.के., केन्या और केनेडा से आए ३५ युवक-युवतियों ने आनंदमय आध्यात्मिक सफर का अनुभव किया। पूज्यश्री दीपकभाई तथा आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रियों के संग शाश्वत सुख, पोजिटिविटी और सच्ची समझ जैसे विषयों पर सत्संग हुआ। भारत और भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त हो इसलिए विविध संस्थाओं की मुलाकात, तीर्थयात्रा, भक्ति और अलग-अलग सेवाओं के कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। पूज्यश्री की उपस्थिति में रक्षाबंधन और जन्माष्टमी जैसे उत्सव मनाने का अमूल्य अवसर शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। अंत में जाते हुए शिविरार्थियों ने कहा कि यहाँ से प्राप्त हुए आध्यात्मिक ज्ञान का खजाना, प्रेममय दिव्य वातावरण और सेवार्थियों की आत्मीयता उनके लिए जिंदगीभर अविस्मरणीय रहेगी।

**२० अगस्त :** रक्षाबंधन के अवसर पर अडालज त्रिमंदिर में पूज्यश्री ने महात्माओं की उपस्थिति में सीमंधर स्वामी, दादा भगवान और मंदिर में स्थापित अन्य सर्व भगवंतों के दर्शन करके राखी बाँधी। जायजेन्टिक हॉल में सुबह १० से दोपहर २ बजे तक दर्शन करते समय महात्माओं ने पूज्यश्री को भाव से राखी अर्पण की। दर्शन के दौरान महात्माओं ने उपयोगपूर्वक प्रार्थनाएँ, चरणविधि, कीर्तन भक्ति, पदगुंजन वगैरह किए। लगभग ७ हजार से भी अधिक महात्माओं को दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ।

**२३-२५ अगस्त:** पूणे में लगातार दूसरे साल आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम अभूतपूर्व रहा। १८०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पहली बार हिन्दी क्षेत्र में इतने सारे लोगों ने एक साथ ज्ञान लिया। महाराष्ट्र के विविध गाँवों और शहरों से लगभग ७०० मुमुक्षु आए। जिनमें से ज्यादातर सह्याद्रि चैनल पर सत्संग कार्यक्रम देखकर आनेवाले मराठी मुमुक्षु थे। पूज्यश्री ने मराठी और हिन्दी भाषा में मुमुक्षुओं के प्रश्नों के उत्तर दिए। सेवार्थियों के लिए विशेष सत्संग-दर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

**२८ अगस्त:** हर साल की तरह इस साल भी अडालज त्रिमंदिर में जन्माष्टमी उत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। त्रिमंदिर में दर्शनार्थी दर्शन के लिए उमड़ पड़े। रात को आयोजित विशेष भक्ति कार्यक्रम के बाद मध्यरात्रि को पूज्यश्री ने मटकी फोडकर, बालकृष्ण का पालना झुलाकर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव भावपूर्वक मनाया। पूज्यश्री ने श्रीकृष्ण भगवान, श्रीनाथजी, बालाजी, दादाश्री, नीरूमौंजी को मखन-मीसरी का प्रसाद अर्पण किया और श्रीकृष्ण भगवान की आरती की। राजकोट, भुज, मोरबी, गोधरा त्रिमंदिरों में भी महात्माओं ने जन्माष्टमी पर्व आनंद-उल्लासपूर्वक मनाया।

**१ सितम्बर :** पूज्यश्री के पवित्र करकमलों द्वारा १ सितम्बर सुबह ९.३० बजे अडालज त्रिमंदिर संकुल के दादानगर में निर्मित हुए 'दादानगर' नामक नए सत्संग हॉल का उद्घाटन हुआ। प्रवेश के समय लिटल एम.एच.टी के बच्चों द्वारा पूज्यश्री का पुष्पों से अभिवादन किया और बेबी एम.एच.टी के बच्चों ने दादाई भक्तिनृत्य प्रस्तुत किया। फिर श्री सीमंधर स्वामी तथा परम पूज्य दादा भगवान की आरती के बाद पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम आरंभ हुआ, जो सुबह-शाम तीन-तीन घंटों तक चला।

**२-९ सितम्बर :** पर्युषण पर्व के प्रथम चार दिन आप्तवाणी-८, पाँचवे दिन 'क्लेश रहित जीवन' पुस्तक के बाकी के पृष्ठ तथा अंतिम तीन दिन आप्तवाणी-७, जिसमें दादाश्री की व्यवहारलक्षी वाणी है, इन पुस्तकों का वाचन हुआ। प्रश्नोत्तरी सत्संग दौरान महात्माओं के बहुत सारे प्रश्न पूछे और उनका समाधान पाया। अंतिम दिन बहुत सारे महात्माओं ने खुद के दोषों की आलोचना की और एक-दूसरे से माफी माँगी। अंत में सहाध्यायियों द्वारा एक-दूसरे के साथ हुए दोषों के प्रतिक्रमण किए गए। बहुत सारे महात्माओं का ऐसा अनुभव था कि पारायण सत्संग और सामायिक से ज्ञान जागृति बढ़ी। रात्रि के समय गरबा और कीर्तन भक्ति का भी एक-एक बार आयोजन हुआ। पूज्यश्री के शुभ हस्तों द्वारा 'समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य' हिन्दी पुस्तक और बच्चों के लिए भक्तिपद की नई ऑडियो सीडी GNC-5 का विमोचन हुआ। लगभग १० हजार महात्माओं ने पारायण का अनुपम लाभ लिया। इन्टरनेट पर वेबकास्ट द्वारा पूरे विश्व से १ हजार से भी ज्यादा महात्माओंने लाइव सत्संग-पारायण देखा।

**१० सितम्बर :** पूज्यश्री ने न्यूजीलैन्ड-ऑस्ट्रेलिया-सिंगापुर में होनेवाले सत्संग के लिए सीमंधर सिटी से प्रयाण किया।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

**जबलपुर** दिनांक : 24 अक्टूबर, समय : सुबह 10-30 से 12-30 संपर्क : 9407022263

स्थल : कच्छ पाटीदार भवन, शुभ मोटर के पास, महानदा, जबलपुर.

**जबलपुर** दिनांक : 25 अक्टूबर, समय : शाम 6 से 8-30 संपर्क : 9407022263

स्थल : कच्छ पाटीदार भवन, शुभ मोटर के पास, महानदा, जबलपुर.

**कानपुर** दिनांक : 24 अक्टूबर, समय : शाम 5 से 7-30 संपर्क : 9451662754

स्थल : नाना महाराज का मंदिर, छोटे बिजली घर के पास, कानपुर.

**कानपुर** दिनांक : 27 अक्टूबर सुबह 10-30 से 12-30 तथा, 28 अक्टूबर शाम 6 से 8-30

स्थल : श्री कोठारी गुजरात भवन, नया गंज, कानपुर. संपर्क : 7379658120

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
  - ✦ 'साधना' पर सोम से शनि - रात ९-३० से १० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
  - ✦ 'डीडी-गिरनार' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० ज्ञानवाणी (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
- UK**
- ✦ 'विनस' (डीश टीवी चैनल 805-युके) पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'साधना' पर हर रोज - शाम ७-१५ से ७-४५ (हिन्दी में) - समय में परिवर्तन
  - ✦ 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
  - ✦ 'दूरदर्शन'- 'डीडी-गिरनार' पर गुजरात में हर रोज दोपहर ३-३० से ४, 'जरा जुओ जागीने' (गुजराती में)
  - ✦ 'डीडी-गिरनार' पर हर रोज रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
  - ✦ 'डीडी-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (मराठी में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST (गुजराती में)
- USA-UK** ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

### दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा : (दादा मंदिर) (0265) 2414142, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भुज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बेंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44(0)330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1-877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

## दादावाणी

### भरूच में परम पूज्य दादा भगवान का १०६वाँ जन्मजयंती महोत्सव

दि. १३ नवम्बर (बुध), शाम ५ बजे - महोत्सव शुभारंभ, शाम ७-३० से १० - सत्संग

दि. १४ नवम्बर (गुरु), सुबह ९-३० से १२, शाम ७-३० से १० - सत्संग

दि. १५ नवम्बर (शुक्र), सुबह ९-३० से १२, शाम ७-३० से १० - सत्संग

दि. १६ नवम्बर (शनि), सुबह ८ से १, शाम ४-३० से ६-३० - जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति

दि. १७ नवम्बर (रवि), सुबह ९-३० से १२ - सत्संग तथा शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

**स्थल :** पांजरापोल ग्राउन्ड, श्रवण चोकडी के पास, दहेज बायपास रोड, भरूच. **संपर्क:** 9924348882

- महोत्सव स्थल रेल्वे तथा बस स्टेशन से 6 कि.मी. के अंतर पर है। स्थल पर पहुँचने के लिए ओटो-रिक्षा मिलेगी।

१) इस महोत्सव में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

२) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।

३) गद्दे की व्यवस्था नहीं है। ओढ़ने-बीछाने का चदर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ।

४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### जबलपुर

दि. २३ अक्टूबर (बुध), शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा २४ अक्टूबर (गुरु), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि

**स्थल :** मानस भवन, राइट टाउन स्टेडियम के पास, सत्य अशोका होटल के सामने. **संपर्क :** 9407022263

#### कानपुर

दि. २६ अक्टूबर (शनि), शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा २७ अक्टूबर (रवि), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि

**स्थल :** बाल भवन, 16/99A, फुल बाग, कानपुर (उत्तर प्रदेश).

**संपर्क :** 7379658120

#### अडालज त्रिमंदिर

दि. ३ नवम्बर (रवि), रात ८ से १० - दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति

दि. ४ नवम्बर (सोम), सुबह ८-३० से शाम ६ - नूतन वर्ष ( वि.सं.२०७० ) के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति

दि. ९ नवम्बर (शनि), शाम ४-३० से ७-सत्संग तथा १० नवम्बर (रवि), शाम ३-३० से ७-ज्ञानविधि

#### वडोदरा

दि. २२ - २३ नवम्बर (शुक्र-शनि), शाम ७ से ९-३० - सत्संग तथा २४ नवम्बर (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि

**स्थल की जानकारी के लिए संपर्क :** 9924343335

#### सावरकुंडला

दि. २६ नवम्बर (मंगल), शाम ८ से १०-३० - सत्संग तथा २७ नवम्बर (बुध), शाम ७ से १०-३० - ज्ञानविधि

दि. २८ नवम्बर (गुरु), शाम ८ से १०-३० - आप्तपुत्र सत्संग

**स्थल :** कृष्णकुमारसिंहजी व्यायाम मंदिर, महुवा रोड, सावरकुंडला.

**संपर्क :** 9327775274

#### भावनगर

दि. २९ - ३० नवम्बर (शुक्र-शनि) -शाम ७ -३० से १० सत्संग तथा १ दिसम्बर (रवि), शाम ६-३० से १० - ज्ञानविधि

**स्थल :** जवाहर ग्राउन्ड, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मोल के सामने, भावनगर.

**संपर्क :** 9924344425

अक्टूबर २०१३  
वर्ष-८, अंक-१२  
अखंड क्रमांक - १७

## दादावाणी

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014  
Valid up to 31-12-2014  
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012  
Valid up to 30-6-2014  
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.

### शत प्रतिशत जुदापन का अनुभव

ऐसे अकेले बैठे हों, तब चंदूभाई (फाइल नं-१) को देखते रहना कि उसका मन क्या कर रहा है, उसकी बुद्धि क्या कर रही है, अहंकार क्या कर रहा है, और यदि सबकुछ शांत हो तो चंदूभाई अलग दिखाई दे, उसे देखते रहना है। दर्पण में चेहरा देखोगे न, तो चंदूभाई दिखेंगे। और फिर आप बोल भी सकते हो कि 'चंदूभाई, आप तो बहुत अच्छे हो, बहुत समझदार दिखाई दे रहे हो।' ऐसा हम बोल सकते हैं। हम उससे ऐसे बातें करेंगे तो फिर वह शत प्रतिशत जुदापन है ऐसा अनुभव होगा।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.